Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُكُمۡ اَنۡ تُؤَدُّوا الۡاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهۡلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمۡتُمۡ بَيۡنَ النَّاسِ اَنۡ تَحۡكُمُوۡا بِالۡعَدۡلِ

(सूरत अन्निसा आयत :59)

अनुवाद: नि:सन्देह अल्लाह तुम्हें यह आदेश देता है कि अमानतें उसके सुपुर्द किया करो जो उसके योग्य हो। और जब तुम लोगों के बीच न्यायक बनो तो न्याय के साथ निर्णय करो।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ وَعَلٰى عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 38

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

28 मुहर्रम 1442 हिज्री कमरी 17 तबूक़ 1399 हिजरी शम्सी 17 सितम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर और मसीह मौऊद के नाम से दुनिया में भेजा है जो लोग मेरा विरोध करते हैं वे मेरा नहीं ख़ुदा तआला का विरोध करते हैं

यही कारण है जिससे अल्लाह की तरफ से भेजे गए मामूर के विरोधियों का ईमान नष्ट हो जाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुरआन करीम में इल्मी और व्यावहारिक पूर्णता की हिदायत है

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि क़ुरआन करीम में इल्मी और व्यावहारिक पूर्णता की हिदायत है; अत: اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ (अल-फातिहा :6) में इल्म की पूर्णता की तरफ इशारा है और व्यावहारिक पूर्णता का वर्णन صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अल-फातिहा :7) में फ़रमाया कि जो पूर्ण परिणाम हैं वे प्राप्त हो जाएं। जैसे एक पौधा जो लगाया गया है जब तक पूरा बड़ा न हो उसे फूल फल नहीं लग सकते। इसी तरह अगर किसी हिदायत के उच्च और सम्पूर्ण नतीजे मौजूद नहीं हैं वह हिदायत मुर्दा हिदायत है। जिसके अन्दर कोई बढ़ने की शक्ति और ताक़त नहीं है। जैसे अगर किसी को वेद की हिदायत पर पूरा अनुकरण करने से कभी यह आशा नहीं हो सकती कि वह हमेशा की मुक्ति या नजात प्राप्त कर लेगा और कीड़ा मकोड़ा बनने की हालत से निकल कर स्थायी आन्नद पालेगा, तो इस हिदायत से क्या प्राप्त, परन्तु क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी हिदायत है कि इस पर अनुकरण करने वाला उच्च दर्जा के कमालों को प्राप्त कर लेता है और ख़ुदा तआला से उसका एक सच्चा सम्बन्ध पैदा होने लगता है। यहां तक कि उसके नेक कर्म जो कुरआन की हिदायतों के अनुसार किए जाते हैं। वह एक पवित्र वृक्ष का उदाहरण है जो क़ुरआन शरीफ़ में दिया गया है। बढ़ते हैं और फल फूल लाते हैं। एक विशेष प्रकार की मिठास और ज़ायक़ा उन में पैदा होता है। अत: अगर कोई आदमी अपने ईमान में बढ़ने का माद्दा नहीं रखता बल्कि उसका ईमान मुर्दा है तो इस पर नेक कर्मों के पवित्र वृक्षों के फलदार होने की क्या उमीद हो सकती है? इसीलिए अल्लाह तआला ने सूरा फ़ातिहा में صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अलफ़ातिहा :7) कह कर एक क़ैद लगा दी है। अर्थात यह राह कोई बिना फल के, हैरान और परेशान करने वाली राह नहीं है बल्कि इस पर चल कर इन्सान सफल और कामयाब होता है और इबादत के लिए पूर्णता व्यवहारिक ज़रूरी चीज़ है; अन्यथा वह केवल एक खेल होगा क्योंकि वृक्ष अगर फल न दे, चाहे वह कितना ही ऊंचा क्यों न हो। लाभदायक नहीं हो सकता।

अल्लाह की तरफ से भेजे गए के विरोधियों का ईमान छीन लिया जाता है

हमारे विरोधियों की अवस्था ऐसी है जिससे ईमान छिन जाने का भय है। क्योंकि वे नेक को बुरा और अल्लाह की तरफ से भेजे हुए को कज़्ज़ाब समझते हैं। जिससे ख़ुदा तआला के साथ एक जंग शुरू हो जाती है। और अब यह स्पष्ट बात है कि ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर और मसीह मौऊद के नाम से

शेष पृष्ठ 12 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

तक्बीर तहरीमा के बाद आँहज़रत (स.अ.व)यह दुआ पढ़ते थे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक़बीर और क़िरअत के बीच कुछ ख़ामोश रहते। तो मैंने पूछा हे रसूलुल्लाह! मेरे माँ बाप (आप पर क़ुर्बान। तक़बीर और किरअत के बीच आप जो ख़ामोश रहते हैं आप क्या पढ़ते हैं? आप ने फ़रमाया: मैं कहता हूँ

اَللّٰهُمَّ بَاعِدۡ بَيۡنِيۡ وَبَيۡنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدۡتَّ بَيۡنَ الۡمَشۡرِقِ وَالۡمَغۡرِبِ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِيۡ مِنَ الۡخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوۡبُ الۡاَبۡيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ اغۡسِلۡ خَطَايَايَ بِالۡمَاءِ وَالثَّلۡجِ وَالۡبَرَدِ

अर्थात: इलाही मेरे और मेरे गुनाहों के बीच इतनी दूरी डाल दे जितनी दूरी तूने पूर्व और पश्चिम में डाली है। इलाही मुझे गुनाहों से ऐसा पवित्र तथा साफ़ कर दे। जैसे सफ़ैद कपड़ा मैल कुचैल से पाक तथा साफ़ कर दिया जाता है। इलाही मेरे गुनाह पानी और बर्फ़ और ओलों से धो डाल।

हज़रत अनस रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर और हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हुमा اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ से नमाज़ शुरू करते थे।

(सही बुख़ारी , भाग 2,किताब इलाज़)

मस्जिदों को फ़ित्ना तथा फ़साद की बुनियाद रखने की जगह बनाना एक ख़तरनाक ज़ुल्म है जिसकी इस्लाम किसी अवस्था में भी आज्ञा नहीं देता।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी لَهُمۡ فِى الدُّنۡيَا خِزۡىٌ وَّلَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ की तफसरी करते हुए फरमाते हैं कि

"चूँकि ये लोग हमारे घर को बर्बाद करना चाहते हैं। इस लिए हम भी उनके घरों को बर्बाद कर देंगे और यह दुनिया में भी अपमानित होंगे और परलोक में भी उन्हें बड़ा अज़ाब मिलेगा। क्योंकि जन्नत ख़ुदा तआला का घर है जिसका प्रतिरूप मस्जिद है। जब उन्होंने मस्जिदों को वीरान कर दिया तो उनको अगले जहान में कहां अमन मिल सकता है। परन्तु इसके यह अर्थ नहीं कि मस्जिदों की पनाह में आने वाले लोगों को इस्लामी शरीयत ने क़ानून से उच्च समझा है। अल्लाह तआला ने सूरत तौबा (रुकू 13) में कुछ ऐसे लोगों का वर्णन किया है जिन्होंने समय की हुकूमत अर्थात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपकी जमाअत के विरुद्ध खुफ़िया कार्यवाहीयां करने के लिए एक मस्जिद तैयार की थी और ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन भी किया था कि आप तशरीफ़ ला कर इस में नमाज़ पढ़ें और दुआ फ़रमाएं। परन्तु अल्लाह तआला ने आप पर हक़ीक़त खोल दी और बता दिया कि उन लोगों ने यह मस्जिद केवल इस लिए तैयार की है ताकि उनकी मुनाफ़क़त पर पर्दा पड़ा रहे और ये लोग यहां जमा हो कर इस्लाम के विरुद्ध मन्सूबे करते रहें और मुसलमानों को तबाह करें। चुनांचे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मस्जिद को गिरा दिया और इस जगह खाद का ढेर लगवा दिया। अत: मस्जिद अपनी ज़ात में किसी मुजरिम को नहीं बचा सकती। अगर मस्जिद में कोई बुरा

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-18)

बच्चियों की आमीन, नाज़मीन तथा नाज़मात जलसा सालाना जर्मनी के साथ रात के खाने का प्रोग्राम, निकाहों के ऐलान

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

19 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, रिपोर्टें और ख़ुतूत देखे और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की व्यस्तता दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में रही।

प्रोग्राम के अनुसार सुबह 11 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 45 फ़ैमिलीज़ के 176 लोगों और 3 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से थीं।

इन सभी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 1 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा।

बच्चियों की आमीन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लजना हाल में तशरीफ़ ले गए जहां प्रोग्राम के अनुसार बच्चियों की आमीन के प्रोग्राम का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 35 बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिया अलीशा वहीद,तमसीला अहमद,लबीका हमीद, अतीक़ा अमान, बासमा रज़ा, एलीज़ा महमूद, माहा अहमद, हिब्बतुन्नूर ताहिर ,अदीना बुशरा, हादिया अहमद, राबिया करीम,सिमरन अतिया, अनायह अहमद काहलों, अलीबा ताहिर, लबीका क़मर, जाज़िबा अकसा अहमद ,माहरा लंगाह ,रोमाना मुदस्सिर ,उज़्मा मीर,फरयाद चौधरी ,फ़रीहा चौधरी ,मीराब इमतियाज़ वड़ैच, आलिया अहमद,आईशा अहमद, सबा ख़ान, दुआ वसीम, नाइला लैयलतु क़द्र ज़िया, हिबा चीमा, मलाहत फ़हीम , ईशा लतीफ़, नाइला सईद,राफ़िया सईद,जाज़िबा नसीर अहमद, हाला परीसा ताहिर, हिरा सालेहा हसन।

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 19 फ़ैमिलीज़ के 72 लोग और 15 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 27 जमाअतों से आई थीं। उनमें से कई लंबे सफ़र तय कर के पहुंची थीं।

Iserlohn और Immenhausen से आने वाले 2 सौ किलोमीटर Wittlich से आने वाले 210 किलो मीटर और Augsburg से आने वाली फ़ैमिलीज़ 350 किलो मीटर का सफ़र तय करके पहुंची थीं,जर्मनी के अतिरिक्त पाकिस्तान और स्वीडन से आने वाले कई लोगों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 7 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए

नाज़मीन तथा नाज़मात जलसा सालाना जर्मनी के साथ रात के खाने का प्रोग्राम

प्रोग्राम के अनुसार आज शाम नाज़िमीन तथा ननाज़मात जलसा सालाना 2019 ई का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ रात के खाने का प्रोग्राम लजना के नमाज़ हाल से जुड़े हुए हाल में किया गया था। अफ़सरान जलसा सालाना और उप अफ़सरान और नाज़िमीन की कुल संख्या 87 है। जब कि लजना जलसा गाह की नाज़िमा आला ,उप नाज़िमा आला और नाज़मात की संख्या 69 है। यह सभी आज के इस आयोजन में शामिल थे।

7 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ हाल में तशरीफ़ लाए और दुआ करवाई और उन सभी सेवा करने वालों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सुहबत में खाना खाया। इसके बाद 8 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई

निकाहों के ऐलान

नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने 19 निकाहों के ऐलान फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा निकाह और मस्नून आयतों की तिलावत के बाद फ़रमाया अब मैं कुछ निकाहों का ऐलान करूँगा।

प्रिया माहदा ज़फ़र पुत्री मशहूद अहमद ज़फ़र साहिब (मुरब्बी सिल्सिला जर्मनी) का निकाह प्रिय फ़हीम अहमद ख़ान (मुरब्बी सिल्सिला स्विटज़रलैंड पुत्र आदरणीय वसीम अहमद ख़ान साहिब के साथ तय पाया।

*प्रिया फ़रहाना ख़ुल्लत पुत्री आदरणीय अनवर अहमद साहिब (लाहौर, पाकिस्तान)का निकाह प्रिय उसामा अदीब (मुरब्बी सिल्सिला , ऐडीशनल नज़ारत तालीमुल क़ुरआन व वक़्फ़े आरिज़ी पाकिस्तान के साथ तय पाया। लड़की की तरफ़ से इसके भाई रावेल अहमद साहिब (जर्मनी जबकि लड़के के पिता आदरणीय अज़हरुल हक़ साहिब (जर्मनी) वकील थे।

प्रिया अरुब नासिर (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय ताहिर अहमद साहिब (मुरब्बी सिल्सिला जर्मनी) का निकाह प्रिय सुहैब नासिर (छात्र दर्जा शाहिद जामिया अहमदिया जर्मनी पुत्र आदरणीय मुहम्मद सादिक़ नासिर साहिब के साथ तय पाया।

*प्रिया नौरीन महरो अहमद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय मुश्ताक़ अहमद चठ्ठा साहिब (फ़रंकफ़र्ट जर्मनी) का निकाह प्रिय आमिर महमूद (वक्फे नौ) पुत्र आदरणीय शाहिद महमूद साहिब (ओबरसट) हाओज़न, जर्मनी के साथ तय पाया।

*प्रिया इलज़ा ख़ालिद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय हारून अहमद साहिब (फ़रंकफ़र्ट जर्मनी)का निकाह प्रिय क़ासिद अहमद (वक्फे नौ)पुत्र आदरणीय इर्फ़ान अहमद साहिब (दराए आईश जर्मनी) के साथ तय पाया।

*प्रिया इमराना जाएद अहमद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय अहसन जाएद साहिब (ओफ़न बाग़, जर्मनी)का निकाह प्रिय दानियाल अहमद (वाकिफे नौ) पुत्र

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

सअद रज़ि जो बदर के ज़माना में बिल्कुल नौजवान थे और जिन के हाथ पर बाद में ईरान विजय हुआ और जो कूफ़ा के संस्थापक और इराक़ के गवर्नर बने परन्तु उनकी नज़र में ये समस्त इज़्ज़तें और गर्व जंगे बदर में शामिल होने की इज़्ज़त तथा गर्व के मुक़ाबले में बिल्कुल तुच्छ थीं।

इस्लाम के आरम्भ में ईमान लाने वाले, मक्की युग में कष्ट सहन करने वाले, नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पहरेदारी का सौभाग्य पाने वाले, इस्लाम धर्म और ख़िलाफ़त की ग़ैरत रखने वाले,दुआओं के स्वीकार होने का स्थान पाने वाले, इस्लाम के फारिस, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

चार मरहूमीन आदरणीय सफ़दर अली गुज्जर साहिब(प्रसिद्ध पंजाबी नज़्म पढ़ने वाले, ज़याफ़त विभाग, अलफ़ज़ल इंटरनेश्नल अख़बार अहमदिया यूके में स्वेच्छा से काम करने वाले), आदरणीया इफ़्फ़त नसीर साहिबा पत्नी प्रोफ़ैसर नसीर अहमद ख़ान साहब मरहूम, आदरणीय अब्दुर्रहीम साक़ी साहिब (कारकुन जनरल सैक्रेटरी ऑफ़िस यूके और आदरणीय सईद अहमद सहगल साहिब (रज़ाकार दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी विभाग डिसपैच का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 अगस्त 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दो जुम्अः पहले जब मैं सहाबा का ज़िक्र कर रहा था तो इस में हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का वर्णन हो रहा था और उन्हीं के बारे में आज भी और कुछ बातें हैं। जंग का वर्णन हुआ था। जंग के दौरान हज़रत सअद की पत्नी हज़रत सलमा रज़ि बिन्त हफ़सा ने देखा कि एक क़ैदी जो कि ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था बड़ी हसरत से इस जंग में हिस्सा लेने का इच्छुक था। उसका नाम अबू मिहजिन सक़फ़ी था जिसे हज़रत उमर रज़ि ने शराब पीने पर देश निकाला की सज़ा दी थी जो यहां पहुंचा। यहां पहुंचने के बाद उसने फिर शराब पी जिसके कारण से हज़रत सअद रज़ि ने उसे कोड़ों की सज़ा दी और ज़न्जीर पहना दी। अबू मिहजिन ने हज़रत सअद रज़ि की लौंडी ज़ुहरा से निवेदन किया कि मेरी ज़ंजीरीं खोल दो कि मैं जंग में शामिल हो सकूं और कहने लगा कि अल्लाह की क़सम अगर मैं ज़िन्दा बच गया तो वापस आकर बेड़ियाँ पहन लूँगा। लौंडी ने उसकी बात मान ली और ज़ंजीरें खोल दीं। अबू मिहजिन ने हज़रत सअद रज़ि के घोड़े पर सवार हो कर मैदान जंग का रुख किया और दुश्मनों की सफ़ों में घुस गया और सीधे जा कर सफ़ेद बड़े हाथी पर हमला किया। हज़रत सअद रज़ि यह सब कुछ देख रहे थे। उन्होंने कहा कि घोड़ा तो मेरा है लेकिन इस पर सवार अबू मिहजिन सक़फ़ी मालूम होता है। जैसा कि पहले वर्णन हुआ था हज़रत सअद रज़ि बीमारी के कारण से इस जंग में स्वंय शरीक नहीं हो सके थे और दूर से निगरानी कर रहे थे। बहरहाल लड़ाई तीन दिन तक जारी रही। लड़ाई जब ख़त्म हुई तो अबू मिहजिन सक़फ़ी ने वापस आकर अपनी ज़ंजीरें पहन लीं। हज़रत सअद रज़ि ने अबू मिहजिन को यह कह कर छोड़ दिया कि अगर तुमने भविष्य में शराब पी तो मैं तुम्हें बहुत सख़्त सज़ा दूँगा। अबू मिहजिन ने वादा किया कि भविष्य में कभी शराब नहीं पिऐगा। एक दूसरी जगह यह वर्णन है कि हज़रत सअद रज़ि ने यह घटना हज़रत उमर रज़ि को लिखी जिस पर हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि अगर यह भविष्य में शराब से तौबा कर ले तो उसे सज़ा न दी जाए। इस पर अबू मिहजन ने भविष्य में शराब न पीने की क़सम खाई जिस पर हज़रत सअद रज़ि ने उसे आज़ाद कर दिया।

(उद्धरित अशरा मुबश्शरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 850-851)

पहले तो वहां वर्णन है कि लौंडी ने छोड़ा था लेकिन इस घटना का विस्तार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने यूं बयान फ़रमाया है। आप ने इस तरह लिखा है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विशेष सहाबा में से थे। हज़रत उम्र रज़ि ने उन्हें अपने ज़माना ख़िलाफ़त में ईरानी फ़ौज के मुक़ाबला में इस्लामी फ़ौज का कमांडर बनाया था। संयोग से उन्हें रान पर एक फोड़ा निकल आया जिसे हमारे हाँ घंबीर कहते हैं। वह लंबे समय तक चलता चला गया। बहुत ईलाज किया परन्तु कोई लाभ न हुआ। आख़िर उन्होंने ख़्याल किया कि अगर मैं चारपाई पर पड़ा रहा और फ़ौज ने देखा कि मैं जो उनका कमांडर हूँ साथ नहीं हूँ तो फ़ौज बद-दिल हो जाएगी। अत: उन्होंने एक वृक्ष पर छज्जा बनवाया जैसे हमारे हाँ लोग बाग़ों की सुरक्षा के लिए बना लेते हैं। आप इस अर्शे में आदमियों की सहायता से बैठ जाते थे ताकि मुसलमान फ़ौज उन्हें देखती रहे और उसे ख़्याल रहे कि उनका कमांडर उनके साथ है। इन्ही दिनों आपको सूचना मिली कि एक अरब सरदार ने शराब पी है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि शराब यद्यपि इस्लाम में हराम थी परन्तु अरब लोग उसके बहुत आदी थे और आदत जब पड़ जाए तो मुश्किल से छूटती है और इस सरदार को अभी इस्लाम लाने पर दो तीन साल का ही समय गुज़रा था और दो तीन साल के अरसा में जब पुरानी आदत पड़ी हो तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि फिर आदत जाती नहीं है। बहरहाल हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि को जब इस मुसलमान अरब सरदार की सूचना मिली कि उसने शराब पी है तो आप ने उसे क़ैद कर दिया। उन दिनों बाक़ायदा क़ैद-ख़ाने नहीं होते थे। जिस व्यक्ति को क़ैद करना मक़सूद होता उसे किसी कमरे में बंद कर दिया जाता था और उस पर पहरा निर्धारित कर दिया जाता था। अत: इस मुसलमान अरब सरदार को भी एक कमरे में बंद कर दिया गया और दरवाज़े पर पहरा लगा दिया गया। फिर लिखते हैं कि वह साल, जब ये जंग हो रही थी, तारीख़े इस्लाम में मुसीबत का साल कहलाता है क्योंकि मुसलमानों का जंग में बहुत नुक़्सान हुआ था। एक जगह पर इस्लामी लश्करके घोड़े दुश्मन के हाथियों से भागे। पास ही एक छोटा सा दरिया था। घोड़े उस में कूदे और अरब चूँकि तैरना नहीं जानते थे इसलिए सैंकड़ों मुसलमान डूब कर मर गए। इसलिए इस साल को मुसीबत का साल कहते हैं। बहरहाल वह मुसलमान अरब सरदार कमरे में क़ैद था। मुसलमान सिपाही जंग से वापस आते और उसके कमरे के क़रीब बैठ कर ये ज़िक्र करते कि जंग में मुसलमानों का बड़ा नुक़्सान हुआ है। वह कुढ़ता और इस बात पर अफ़सोस प्रकट करता कि वह इस अवसर पर जंग में हिस्सा नहीं ले सका। बेशक इस में कमज़ोरी थी कि उसने शराब पी ली लेकिन वह था बड़ा बहादुर, उसके अंदर जोश पाया जाता था। जंग में मुसलमानों के नुक़्सानों का वर्णन सुनकर वह कमरे में इस तरह टहलने लग जाता जैसे पिंजरे में शेर टहलता है। टहलते टहलते वह शेअर पढ़ता जिस का अर्थ यह था कि आज ही अवसर था कि तू इस्लाम को बचाता और अपनी बहादुरी के जौहर दिखाता परन्तु तू क़ैद है। हज़रत सअद रज़ि की बीवी बड़ी बहादुर औरत थीं। वह एक दिन उसके कमरे के पास से गुज़रीं तो उन्होंने वे शेअर सुन लिए। उन्होंने देखा कि वहां पहरा नहीं है। वह दरवाज़ा के पास गईं और उस क़ैदी को सम्बोधित करते हुए कहा कि तुझे पता है कि सअद

रज़ि ने तुझे क़ैद किया हुआ है। अगर उसे पता लग गया कि मैंने तुझे क़ैद से आज़ाद कर दिया है तो मुझे छोड़ेगा नहीं लेकिन मेरा जी चाहता है कि मैं तुझे क़ैद से आज़ाद कर दूं ताकि तू अपनी इच्छा के अनुसार इस्लाम के काम आ सके। उसने कहा अब जो लड़ाई हो तो मुझे छोड़ दिया करें। मैं वादा करता हूँ कि लड़ाई के बाद फ़ौरन वापस आकर इस कमरे में दाख़िल हो जाया करूँगा। उस औरत के दिल में भी इस्लाम का दर्द था और इसकी सुरक्षा के लिए जोश पाया जाता था इसलिए उसने उस व्यक्ति को क़ैद से निकाल दिया। अत: वह लड़ाई में शामिल हुआ और ऐसी बहादुरी से लड़ा कि उसकी बहादुरी की कारण से इस्लामी लश्कर बजाय पीछे हटने के आगे बढ़ गया। सअद रज़ि ने उसे पहचान लिया और बाद में कहा कि आज की लड़ाई में वह व्यक्ति मौजूद था जिसे मैंने शराब पीने की कारण से क़ैद किया हुआ था। यद्यपि इस ने चेहरे पर नक़ाब डाला हुआ था परन्तु मैं उसके हमला के अंदाज़ और क़द को पहचानता हूँ। मैं उस व्यक्ति को तलाश करूँगा जिसने उसे क़ैद से निकाला है और उसे सख़्त सज़ा दूँगा अर्थात जिसने इस को इस क़ैद से बाहर निकाला उस की ज़ंजीरें खोली उसको सख़्त सज़ा दूँगा। जब हज़रत सअद रज़ि ने यह शब्द कहे तो उनकी बीवी को ग़ुस्सा आ गया और उसने कहा कि तुझे शर्म नहीं आती कि आप तो वृक्ष पर छज्जा बना कर बैठा हुआ है और इस व्यक्ति को तू ने क़ैद किया हुआ है जो दुश्मन की फ़ौज में बहादुरी से घुस जाता है और अपनी जान की पर्वा नहीं करता। मैंने उस व्यक्ति को क़ैद से छुड़ाया था तुम जो चाहो कर लो। मैंने उसे खुलवाया था अब जो तुम ने करना है कर लो। बहरहाल यह विस्तार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने अपनी एक लजना की तक़रीर में वर्णन फ़रमाया था और यह वर्णन फ़र्मा के फ़रमाया था कि अत: औरतों ने इस्लाम में बड़े बड़े काम किए हैं। आप ने यह फ़रमाया कि अत: आज भी अहमदी औरतों को इन उदाहरणों को सामने रखना चाहिए।

(उद्धरित क़ुरूने- ऊला की मुसलमान ख़वातीन का नमूना, अनवारुल उलूम भाग 25 पृष्ठ 428 से 430)

फिर औरतों की क़ुर्बानी का हज़रत सअद रज़ि के हवाले से ही और अधिक घटनाओं का वर्णन सुनें।

अन्सार के क़बीला बनू सुलैम की मशहूर शायरा और सहाबिया हज़रत ख़ंसा रज़ि ने इस जंग में अपने चार बेटे अल्लाह की राह में क़ुर्बान किए। हज़रत ख़ंसा रज़ि के पति और भाई उनकी जवानी में फ़ौत हो गए थे। हज़रत ख़ंसा ने बड़ी मेहनत से अपने बच्चों को पाला था। क़ादसिया की जंग के आख़िरी दिन सुबह जंग से पहले हज़रत ख़ंसा ने अपने बेटों से सम्बोधित हो कर फ़रमाया कि हे मेरे बेटो तुमने अपनी ख़ुशी से इस्लाम स्वीकार किया है और अपनी इच्छा से हिजरत की है। उस ज़ात की क़सम जिसके इलावा और कोई उपास्य नहीं मैंने तुम्हारे वंश में कोई लज्जा नहीं आने दी। याद रखो कि आख़िरत का घर इस नश्वर दुनिया से बेहतर है। बेटो! डट जाओ और साबित-क़दम रहो और कंधे से कंधा मिला कर लड़ो। ख़ुदा का तक़्वा धारण करो। जब तुम देखोगे कि घमसान की लड़ाई हो रही है और उसका तंदूर भड़क उठा है और शहसवारों ने अपने सीने तान लिए हैं तो तुम अपनी आख़िरत को संवारने के लिए इस में कूद जाओ। हज़रत ख़ंसा रज़ि के बेटों ने उनकी वसीयत पर अनुकरण करते हुए अपने घोड़ों की बागें उठाईं और बहादुरी के ये शेअर पढ़ते हुए मैदाने जंग में कूद गए और बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए। उस दिन शाम से पहले क़ादसिया पर इस्लामी पर्चम लहरा रहा था। हज़रत ख़ंसा रज़ि को बताया गया कि तुम्हारे चारों बेटे शहीद हो गए हैं तो उन्होंने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह ने उन्हें शहादत से सरफ़राज़ किया। मेरे लिए कम गर्व नहीं कि वह सच्चाई की राह में क़ुर्बान हो गए। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत के साय में ज़रूर जमा रखेगा।

क़ादसिया को फ़तह करने के बाद इस्लामी लश्कर ने बाबिल को फ़तह किया। बाबिल वर्तमान इराक़ का पुराना शहर था जिसका वर्णन हारूत और मारूत के सिल्सिला में क़ुरआन ने भी किया है और यह वहीं था जहां आज कूफ़ा है। शहरों का जो परिचय है इस में इसका यह परिचय लिखा है। और फिर आगे यह वर्णन करते हैं कि यह फ़तह करके कूसा नाम के ऐतिहासिक शहर के स्थान पर पहुंचे यह वह स्थान था जहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम को नमरूद ने क़ैद किया था। क़ैद ख़ाने की जगह उस समय तक महफ़ूज़ थी। हज़रत सअद रज़ि जब वहां पहुंचे और क़ैद ख़ाने को देखा तो क़ुरआन करीम की आयत पढ़ी।

تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इम्रान141)

अर्थात ये दिन ऐसे हैं कि हम उन्हें लोगों के बीच अदलते बदलते रहते हैं ताकि वे नसीहत पकड़ें।

कूसा से आगे बढ़े तो बहरा शेर एक स्थान पर पहुंचे। मोअज्जमुल बुलदान जो शहरों की मोअजम है उसके अनुसार उस का नाम बेहरेसेर है। बेहरेसेर दरिया दजला के पश्चिम में स्थित इराक़ के शहर मदायन के निकट बग़दाद के आसपास के इलाक़ों मेंसे एक स्थान का नाम है। यहां किसरा का शिकारी शेर रहता था। हज़रत सअद रज़ि का लश्कर क़रीब पहुंचा तो उन्होंने उस दरिंदे को लश्कर पर छोड़ दिया। शेर गरज कर लश्कर पर हमला करने लगा। हज़रत सअद रज़ि के भाई हाशिम बिन अबी वक़ास लश्कर के आगे के दस्ते के अफ़्सर थे। उन्होंने शेर पर तलवार से ऐसा वार किया कि शेर वहीं ढेर हो गया।

फिर उसी जंग में मदायन का युद्ध भी है। मदायन किसरा की राजधानी थी। यहां पर उसके सफ़ैद महल थे। मुसलमानों और मदायन के बीच दरिया दजला रोक थी। ईरानियों ने दरिया के समस्त पुल तोड़ दिए। हज़रत सअद ने फ़ौज से कहा कि मुसलमानो, दुश्मन ने दरिया की पनाह ले ली है। आओ उसको तैर कर पार करें और यह कह कर उन्होंने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। हज़रत सअद रज़ि के सिपाहियों ने अपने नेता का अनुकरण करते हुए घोड़े दरिया में डाल दिए और इस्लामी फ़ौजें दरिया के पार उतर गईं। ईरानियों ने यह हैरान करने वाला दृश्य देखा तो ख़ौफ़ से चिल्लाने लगे और भाग खड़े हुए कि देव आ गए। देव आ गए। मुसलमानों ने आगे बढ़कर शहर और किसरा के महलों पर क़ब्ज़ा कर लिया और इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हो गई जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग एहज़ाब के अवसर पर ख़ंदक़ खोदते हुए पत्थर पर कुदाल मारते हुए फ़रमाई थी कि मुझे मदायन के सफ़ेद महल गिरते हुए दिखाए गए हैं। इन महलों को सुनसान हालात में देखकर हज़रत सअद रज़ि ने सूरह दुख़ान की आयतें पढ़ीं।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ۔ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ۔ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ۔ كَذٰلِكَ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ۔

(अद्दुख़ान 26-29)

कितने ही बाग़ और चश्मे हैं जो उन्होंने पीछे छोड़े और खेतियाँ और इज़्ज़त तथा सम्मान के स्थान भी और नाज़ तथा नेअमत जिसमें वे मज़े उड़ाया करते थे। इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी क़ौम को इस नेअमत का वारिस बना दिया।

बहरहाल उसके बाद हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि की सेवा में लिख कर और अधिक आगे बढ़ने की आज्ञा चाही जिस पर हज़रत उमर रज़ि ने उनसे फ़रमाया कि अभी इसी पर ठहरो और विजित क्षेत्र के प्रबन्ध की तरफ़ ध्यान दिया जाए। अत: हज़रत सअद रज़ि ने मदायन को केन्द्र बना कर प्रबन्ध को दृढ़ करने की कोशिश शुरू की और इस काम को बख़ूबी निभाया। आप ने इराक़ की जनसख्या की और भूमि को नपावाया। लोगों के आराम तथा सुविधा का प्रबन्ध किया और अपने उत्तम आचरण और व्यवहार से प्रमाणित किया कि आप को अल्लाह ने जंगी योग्यताओं के साथ साथ प्रशासकीय योग्यताओं से भी परिपूर्ण फ़रमाया है। लोग समझते हैं कि मुसलमानों ने फ़तह किया तो प्रजा का ख़्याल नहीं रखा लेकिन मुसलमानों ने जब शहर फ़तह किए तो वहां के रहने वालों का पहले से बढ़कर ख़्याल रखा गया।

फिर कूफ़ा शहर का बनाना है। मदाइन की जलवायु अरबों की तबीयत के लिए अच्छी न थी तो हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि की आज्ञा से एक नया शहर बसाया जिसमें विभिन्न अरब क़बीलों को अलग अलग मुहल्लों में आबाद किया और शहर के बीच एक बड़ी मस्जिद बनवाई जिसमें चालीस हज़ार नमाज़ी एक समय में नमाज़ पढ़ सकते थे। कूफ़ा दरअसल फ़ौजी छावनी था जिसमें एक लाख सिपाही बसाए गए थे। इसका और अधिक विस्तार यह है कि हज़रत सअद रज़ि ने एक समय तक मदाइन में निवास करने के बाद महसूस किया कि यहां की जलवायु ने अरब वालों का रंग तथा रूप बिल्कुल बदल दिया है। हज़रत उमर रज़ि को इससे सूचना दी तो हुक्म आया कि अरब की सरहद में कोई उचित ज़मीन तलाश करके एक नया शहर बसाएँ और अरबी क़बीलों को आबाद करके उस को हुकूमत की राजधानी क़रार दें। हज़रत सअद रज़ि ने इस आदेश के अनुसार मदाइन से निकल कर एक उचित स्थान देख कर कूफ़ा के नाम से एक बड़े शहर की बुनियाद डाली। अरब के अलग अलग क़बीलों को अलग अलग मुहल्लों में आबाद किया। मध्य में एक बड़ी शानदार मस्जिद बनवाई जिसमें लगभज चालीस हज़ार नमाज़ियों की गुंजाइश रखी गई थी। मस्जिद के क़रीब ही बैयतुलमाल की इमारत और अपना महल बनावाया जो कसरे सअद के नाम से प्रसिद्ध था।

(उद्धरित रोशन सितारे पृष्ठ 84 से 88) (उद्धरित सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 117-118)(मोअजमुल बुलदान अनुवाद पृष्ठ 56) (मोअजमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 610)

फिर जंग नहावनद है यहां 21 हिज्री में ईरानियों ने इराक़ अजमी अर्थात इराक़ का वह हिस्सा जो फ़ारसियों के पास था इस में मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगी तैयारियां कीं और मुसलमानों से विजित इलाक़े वापस लेने की उद्देश्य से नहाविंद के स्थान पर मुसलमानों के ख़िलाफ़ डेढ़ लाख ईरानी जंग करने वाले इकट्ठे हुए। हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि को सूचना दी तो आप ने परामर्श देने वालों के मश्वरे से एक इराक़ी हज़रत नौमान बिन मुक़र्रिन मुज़न्नी रज़ि को मुसलमान फ़ौज का क़ायद निर्धारित फ़रमाया। हज़रत नुअमान उस समय कसकर में थे। कसकर नहरवान से लेकर बस्रा के क़रीब दरिया दजला के मुहाने तक का इलाक़ा है जिसमें कई गांव और क़स्बे हैं। बहरहाल हज़रत उमर रज़ि ने उन्हें नहाविंद पहुंचने का आदेश दिया। डेढ़ लाख ईरानियों के मुक़ाबला पर मुसलमानों की संख्या तीस हज़ार थी। हज़रत नुअमान रज़ि ने लश्कर की सफ़ों में फिर कर उन्हें हिदायतें दीं और फिर कहा कि अगर मैं शहीद हो जाऊं तो लश्करके नेता हुज़ैफ़ा होंगे और अगर वह शहीद हों तो अमीर लश्कर अमुक़ होगा और इस तरह एक एक करके उन्होंने सात आदमियों का नाम लिया। उसके बाद अल्लाह से दुआ की कि अल्लाह! अपने धर्म को सम्मानित फ़र्मा और अपने बंदों की सहायता फरमा और नुअमान रज़ि को आज सबसे पहले शहादत का दर्जा प्रदान फ़र्मा। एक दूसरी रिवायत के अनुसार उन्होंने दुआ की कि हे अल्लाह मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि आज मेरी आँख ऐसी विजय के द्वारा ठंडी कर जिसमें इस्लाम की इज़्ज़त हो और मुझे शहादत प्रदान हो। जंग शुरू हुई। मुसलमान इस बहादुरी के साथ लड़े कि सूरज डूबने तक पहले मैदान मुसलमानों के हाथ में था और इसी जंग में हज़रत नुअमान रज़ि शहीद हो गए। अबू लु लू फिरोज़ इसी जंग में क़ैद हुआ और वह ग़ुलाम बन कर हज़रत मुग़ैरा बिन शुअब के हिस्सा में आया। यह वही व्यक्ति है जिसने बाद में हज़रत उमर रज़ि पर हमला करके उन्हें शहीद किया था। हज़रत उमर रज़ि ने नहाविंद के अमीर को ख़त लिखा कि अगर अल्लाह मुसलमानों को विजय प्रदान फ़रमाए तो ख़मस अर्थात 1/5 बैयतुल माल के लिए रखकर समस्त माले ग़नीमत मुसलमानों में बंटे दो और अगर यह लश्कर हलाक हो जाए तो कोई बात नहीं क्योंकि ज़मीन की सतह से इसका भीतर अर्थात क़ब्र बेहतर है।

हज़रत उमर रज़ि के दौरे ख़िलाफ़त में एक बार क़बीला बनू असद के लोगों ने हज़रत सअद रज़ि की नमाज़ पर एतराज़ किया और उनकी शिकायतें हज़रत उमर रज़ि से कीं कि सही तरह नमाज़ नहीं पढ़ाते। हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलम रज़ि को तहक़ीक़ के लिए भेजा। तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि शिकायतें ग़लत थीं। परन्तु कुछ मस्लहतों के आधार पर हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि को मदीना में बुला लिया।

(उद्धरित रोशन सितारे भाग 2 पृष्ठ 88 से 90)

(शरह जरक़ानी अला मवाहेबे लदुन्निया भाग 4 पृष्ठ 539 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत (मोअजमुल बुलदान अनुवाद पृष्ठ 292)

इसका विस्तार सही बुख़ारी की रिवायत में यूं वर्णन हुआ है कि हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि से रिवायत है। वह कहते थे कि कूफ़ा वालों ने हज़रत उमर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के पास हज़रत सअद रज़ि की शिकायत की तो उन्होंने उनको स्थगित कर दिया और हज़रत अम्मार रज़ि को उनका आमिल अर्थात हाकिम निर्धारित किया। कूफ़ा वालों ने हज़रत सअद रज़ि के बारे में शिकायतों में यह भी कहा था कि वह नमाज़ भी अच्छी तरह नहीं पढ़ाते तो हज़रत उमर रज़ि ने उनको बुला भेजा और कहा हे अब्बू इस्हाक़ (अब्बू इस्हाक़ हज़रत सअद रज़ि की कुनिय्यत थी) ये लोग तो कहते हैं कि आप अच्छी तरह नमाज़ भी नहीं पढ़ाते। अबू इस्हाक़ ने कहा मैं तो अल्लाह की कसम उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़ पढ़ाया करता था। इस में ज़रा भी कम नहीं करता था। इशा की नमाज़ पढ़ाता तो पहली दो रकअतें लंबी और पिछली दो रकातें हल्की पढ़ता था। तब हज़रत उमर रज़ि ने कहा अब्बू इस्हाक़ आपके बारे में यही ख़्याल था। अर्थात मुझे उम्मीद थी कि इस तरह ही करते होंगे।

फिर हज़रत उमर रज़ि ने उनके साथ एक आदमी या कुछ आदमी कूफ़ा रवाना किए ताकि उनके बारे में कूफ़ा वालों से पूछें। उन्होंने कोई मस्जिद भी नहीं छोड़ी जहां हज़रत सअद रज़ि के बारे में न पूछा गया हो। हर मस्जिद में गए और लोग उनकी (हज़रत की) अच्छी प्रशंसा करते थे। आख़िर वह क़बीला बनू अबस की की मस्जिद में गए। उनमें से एक आदमी खड़ा हुआ। उसे उसामा बिन क़तादा कहते थे और अबू सअदह उसकी कुनिय्यत थी। उसने कहा चूँकि तुमने हमें कसम दी है इसलिए असल बात यह है कि सअद रज़ि फ़ौज के साथ नहीं जाया करते थे और न बराबर तक़सीम करते थे और न फ़ैसले में इन्साफ़ करते थे। यह इल्ज़ाम उन्होंने हज़रत सअद रज़ि पर लगाए। हज़रत सअद रज़ि ने जो यह बात सुनी तो इस पर हज़रत सअद रज़ि ने कहा। देखो अल्लाह की क़सम मैं तीन दुआएं करता हूँ कि हे मेरे अल्लाह अगर तेरा यह बन्दा झूठा है और दिखावा और शौहरत के लिए खड़ा हुआ है अर्थात जो इल्ज़ाम लगाने वाला था तू उसकी उम्र लम्बी कर और उसकी मोहताजी को बढ़ा और उसे मुसीबतों वाला बना। उसके बाद जब कोई उस व्यक्ति का हाल पूछता जिसने इल्ज़ाम लगाया था तो वह कहता बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ। बुरी हालत है। मुसीबत में पड़ा हूँ और हज़रत सअद रज़ि की बददुआ मुझे लग गई है अर्थात लोगों ने झूठा इल्ज़ाम लगवाया था। इसका नतीजा भुगत रहा हूँ। अब्दुल मलिक कहते थे कि मैंने उसके बाद उसे देखा है। हालत यह थी कि बुढ़ापे की कारण से इसकी भंवें उस की दोनों आँखों पर आ पड़ी थीं और ताज्जुब है कि उसके बावजूद उसके आचरण की हालत का यह हाल था कि वह रास्तों में छोकरियों को छेड़ता और तांकझांक करता था। बुख़ारी में यह सारी घटना वर्णन है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब वजूब अलकरा लिल्इमाम वलमामून ... हदीस 755)

बहरहाल इन शिकायतों का हज़रत सअद रज़ि को बहुत दुख हुआ और आप ने कहा अरबों में से मैं पहला हूँ जिसने अल्लाह की राह में तीर फेंका और हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग के लिए निकलते और हालत यह थी कि हमारे पास खाने की कोई चीज़ न होती सिवाए दरख़्तों के पत्तों के। हमारा यह हाल था कि हम में से हर एक इस तरह मेंगनियां करता जैसे ऊंट लीद करते हैं या बकरियां मेंगनियां करती हैं अर्थात ख़ुशक। और अब यह हाल है कि बनू असद इब्न ख़ुज़ैम: मुझको इस्लाम के शिष्टाचार सिखाते हैं। तब तो मैं बिल्कुल असफल रहा और मेरा कर्म नष्ट हो गया और बनू असद के लोगों ने हज़रत उमर रज़ि के पास चुग़ली खाई थी और कहा था कि वह अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ता। यह भी बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी बाब मनाक़िब सअद बिन अबी वक़ास हदीस नम्बर 3728)

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुल ज़ुहद बाब मा जाआ फ़ी मईश अस्हाबुन्नबी हदीस नम्बर 2365-2366)

23 हिज्री में जब हज़रत उमर रज़ि पर क़ात्लाना हमला हुआ तो हज़रत उमर रज़ि से लोगों ने निवेदन किया कि आप ख़िलाफ़त के लिए किसी को चुन दें। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने ख़िलाफ़त के चुनाव के लिए एक बोर्ड निर्धारित किया जिसमें हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि, हज़रत ज़ुबैर बिनअवाम रज़ि और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि थे। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया उनमें से किसी एक को चुन लेना क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें जन्नत वाला क़रार दिया है। फिर फ़रमाया कि अगर ख़िलाफ़त सअद बिन अबी वक़ास रज़ि को मिल गई तो वही ख़लीफ़ा हों वर्ना जो भी तुम में से ख़लीफ़ा हो वह सअद रज़ि से मदद लेता रहे क्योंकि मैंने उन्हें इसलिए स्थगित नहीं किया कि वह किसी काम के करने से असमर्थ थे और न इसलिए कि उन्होंने कोई ख़यानत की थी।

(उद्धरित सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी बाब किस्सा अलबैअत अलइत्तफ़ाक अला उसमान बिन अफ्फान हदीस नम्बर 3700)

(सही बुख़ारी किताबुल जनायज़ बाब मा जाअ फ़ी क़ब्रुन्नबी व अबी बकर व उमर हदीस नम्बर1392)

जब हज़रत उसमान रज़ि ख़लीफ़ा चुने गए हुए तो उन्होंने हज़रत सअद रज़ि को दोबारा कूफ़ा का वाली बना दिया। आप तीन साल तक इस ओहदे पर फ़ाइज़ रहे और उसके बाद किसी कारण से हज़रत सअद रज़ि का हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि से मतभेद हुआ जो उस समय बैयतुल माल के इंचार्ज थे जिसके कारण से हज़रत उसमान रज़ि ने उन्हें (हज़रत सअद रज़ि) को स्थगित कर दिया। स्थगित होने के बाद हज़रत सअद रज़ि ने मदीना में एकान्त धारण कर लिया। जब हज़रत उसमान रज़ि के विरुद्ध फ़ित्ना तथा फ़साद शुरू हुआ तब भी आप

एकान्त में ही रहे।

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 120)

एक रिवायत में आता है कि फ़ित्ना के ज़माने में एक बार हज़रत सअद रज़ि के साहिबज़ादा ने हज़रत सअद रज़ि से पूछा कि आप को किस चीज़ ने जिहाद से रोका है। इस पर हज़रत सअद रज़ि ने जवाब दिया कि मैं तब तक नहीं लड़ूंगा यहां तक कि मुझे ऐसी तलवार लाकर दो जो मोमिन और काफ़िर को पहचानती हो। अब तो मुसलमान मुसलमान आपस में लड़ रहे हैं। एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि हज़रत सअद रज़ि ने फ़रमाया कि ऐसी तलवार लाओ जिसकी आँखें, होंट और ज़बान हों और जो मुझे बताए कि अमुक़ व्यक्ति मोमिन है और अमुक़ व्यक्ति काफिर है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 106 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

अब तक तो मैं केवल काफ़िरों के ख़िलाफ़ लड़ा हूँ।

सुनन तिर्मिज़ी की एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उसमान रज़ि के ज़माना में शुरू होने वाले फ़ित्नों के बारे में फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ज़रूर अगले ज़माना में एक फ़ित्ना होगा और इस में बैठा रहने वाला खड़े होने वाले व्यक्ति से बेहतर होगा और खड़ा होने वाला व्यक्ति चलने वाले व्यक्ति से बेहतर होगा और चलने वाला व्यक्ति दौड़ने वाले से बेहतर होगा। अर्थात कि हर लिहाज़ से किसी तरह भी इस फ़ित्ना में शामिल नहीं होना बल्कि बचने की कोशिश करनी है, तो बहरहाल किसी ने पूछा कि अगर फ़ित्ना मेरे घर में दाख़िल हो जाए तो मैं क्या करूँ। फ़रमाया कि तू इब्ने आदम की तरह हो जाना।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुलिफ़तन बाब मा जा अना तकूनो फ़ितन .... हदीस नम्बर 2194)

अर्थात जैसे क़ुरआन शरीफ़ में इस इब्ने आदम का वर्णन है कि अपना बचाओ तो करो लेकिन एक दूसरे को क़त्ल करने की नीयत से लड़ाई नहीं करनी और यही घटना है जो क़ुरआन करीम में वर्णन हुई है। इससे यही लगता है कि वही उदाहरण आप ने दिया था।

हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ख़िलाफ़त के दौर में जब फ़ित्नों का आरम्भ हुआ तो इस फ़ित्ने को दूर करने में सहाबा की उत्तम कोशिशों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि

"यद्यपि सहाबा रज़ि को अब हज़रत उसमान रज़ि के पास जमा होने का अवसर न दिया जाता था परन्तु फिर भी वे अपने फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल न थे। वक़्त की मस्लेहत के अधीन उन्होंने दो हिस्सों में अपना काम बांट लिया हुआ था जो उम्र वाले बूढ़े थे "और जिनका आचरण का प्रभाव लोगों पर ज़्यादा था वह तो अपने समयों को लोगों को समझाने पर व्यतीत करते और जो लोग ऐसा कोई असर न रखते थे या नौजवान थे वे हज़रत उसमान रज़ि की सुरक्षा की कोशिश में लगे रहते। फिर लिखते हैं कि पहली जमाअत में से हज़रत अली रज़ि और हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि फ़ातिह फ़ारस फ़ित्ना के कम करने में सबसे ज़्यादा कोशिश करते थे।"

(इस्लाम में इख़्तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 321)

हज़रत उसमान रज़ि के बाद हज़रत अली रज़ि की ख़िलाफ़त में भी हज़रत सअद रज़ि एकान्त में ही रहे। एक रिवायत के अनुसार जब हज़रत अली रज़ि और अमीर मुआविया के बीच मतभेद बढ़ा तो अमीर मुआविया ने तीन सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि और हज़रत मुहम्मद बिन मसलमहा को अपनी मदद के लिए ख़त लिखा और उनको लिखा कि वे हज़रत अली रज़ि के ख़िलाफ़ उनकी मदद करें। इस पर इन तीनों ने इनकार किया। हज़रत सअद रज़ि ने अमीर मुआविया को ये अशआर लिख कर भेजे कि

مُعَاوِیَ دَاؤُكَ الدَّاءُ الْعَیَاءُ
وَ لَیْسَ لِمَا تَجِیْءُ بِهٖ دَوَاءُ
اَیَدْعُوْنِیْ اَبُوْ حَسَنٍ عَلِیٌّ
فَلَمْ اَرْدُدْ عَلَیْهِ مَا یَشَاءُ
وَ قُلْتُ لَهٗ اَعْطِنِیْ سَیْفًا بَصِیْرًا
تَمِیْزُ بِهِ الْعَدَاوَةُ وَالْوَلَاءُ
اَتَطْمَعُ فِی الَّذِیْ اَعْیَا عَلِیًّا

अनुवाद इनका यह है कि हे मुआविया तेरी बीमारी सख़्त है। तेरी बीमारी की कोई दवा नहीं। क्या तू इतना भी नहीं समझता कि अबू हसन अर्थात हज़रत अली रज़ि ने मुझे लड़ने के लिए कहा था परन्तु मैंने उनकी बात भी नहीं मानी और मैंने उनसे कहा कि मुझे ऐसी तलवार दे दें जो बसीरत रखती हो और मुझे दुश्मन और दोस्त में अन्तर करके बता दे। हे मुआविया क्या तू उम्मीद रखता है कि जिसने लड़ाई करने के लिए हज़रत अली रज़ि की बात न मानी हो वह तेरी बात मान लेगा। हालाँकि हज़रत अली रज़ि की ज़िन्दगी का एक दिन तेरी सारी ज़िन्दगी और मौत से बेहतर है और तू ऐसे व्यक्ति के ख़िलाफ़ मुझे बुलाता है। उसदुल ग़ाबह की यह रिवायत है। इस में घटना वर्णन है।

(उसदुल ग़ाब: फ़ी माअरफ़तिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 455 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

एक रिवायत में आता है कि एक बार अमीर मुआविया ने हज़रत सअद रज़ि से पूछा कि अबू तुराब (यह हज़रत अली रज़ि की कुनिय्यत थी) को बुरा कहने से आपको किस चीज़ ने मना किया है? उनको आप बुरा नहीं कहते थे। हज़रत सअद रज़ि ने फ़रमाया वे तीन बातें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में फ़रमाई हैं अगर उनमें से एक भी मुझे मिल जाती तो वह मेरे लिए लाल ऊंटों से भी ज़्यादा महबूब होती। इन तीन बातों के कारण से मैं कभी उनको अर्थात हज़रत अली रज़ि को बुरा नहीं कहूँगा। नम्बर एक यह कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि को एक जंग में अपने पीछे छोड़ा। इस पर हज़रत अली ने आप से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! आप मुझे औरतों और बच्चों में छोड़ रहे हैं। इस पर हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तू इस बात पर ख़ुश नहीं कि तेरा मेरे साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा कि हारून का मूसा के साथ था, सिर्फ इस अन्तर के साथ कि मेरे बाद तुझे नबुव्वत का स्थान हासिल नहीं है। नम्बर दो बात यह कही कि जंग ख़ैबर के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया कि मैं ऐसे व्यक्ति को इस्लामी झंडा प्रदान करूँगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और अल्लाह और उसका रसूल इससे मुहब्बत रखते हैं। इस पर हमने उस बात की इच्छा की, हर एक में इच्छा पैदा हुई कि झंडा हमें दिया जाए हम भी अल्लाह से और रसूल से मुहब्बत रखते हैं। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अली को बुलाओ। हम में से किसी को नहीं दिया बल्कि फ़रमाया कि अली को बुलाओ। हज़रत अली रज़ि आए। उनकी आँखों में कष्ट था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी आँख में अपना थूक लगाया और उनको इस्लामी झंडा दिया और अल्लाह ने उस दिन मुसलमानों को फ़तह प्रदान फ़रमाई। फिर तीसरी बात उन्होंने यह वर्णन की कि जब आयत

فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ (आले इमरान 62)

इसका अनुवाद यह है कि तू कह दे कि आओ हम अपने बेटों को बुलाऐं और तुम अपने बेटों को। हम अपनी औरतों को बुलाऐं और तुम अपनी औरतों को। जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि, हज़रत फ़ातिमा रज़ि और हज़रत हसन रज़ि और हज़रत हुसैन रज़ि को बुलाया और फ़रमाया कि हे अल्लाह! यह मेरा अहलो अयाल(घर वाले) हैं। यह तिर्मिज़ी की रिवायत है।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाब अलमनाक़िब बाब अन दारुल हिकमत हदीस

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

3724)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के बेटे मुसअब बिन सअद वर्णन करते हैं कि मेरे पिता के देहान्त का समय आया तो उनका सिर मेरी गोद में था। मेरी आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने मुझे देखा और मुझसे कहा कि हे मेरे बेटे! तुझे क्या चीज़ रुलाती है। मैं ने निवेदन किया आपकी वफ़ात का ग़म और इस बात का ग़म कि मैं आपके बाद आपका बदल किसी को नहीं देखता। इस पर हज़रत सअद रज़ि ने फ़रमाया मुझ पर मत रो। अल्लाह मुझे कभी अज़ाब नहीं देगा और मैं जन्नितयों में से हूँ। कुछ लोग एतराज़ करते हैं कि जी अमुक़ ने अमुक़ प्रोग्राम में कह दिया जन्नितयों में से किस तरह हो गए तो यहां हज़रत सअद रज़ि भी फ़र्मा रहे हैं कि मैं जन्नितयों में से हूँ। फिर फ़रमाया कि अल्लाह मोमिनों को उनकी नेकियों का बदला देता है जो उन्होंने अल्लाह के लिए कीं और जहां तक कुफ़्फ़ार का मामला है तो अल्लाह उनके अच्छे कामों के कारण से उनके अज़ाब को हल्का कर देता है परन्तु जब वे अच्छे काम ख़त्म हो जाएं तो दोबारा अज़ाब देता है। हर इन्सान को अपने कर्मों का बदला उससे मांगना चाहिए जिसके लिए उसने कर्म किया हो।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 108-109 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के बेटे रिवायत करते हैं कि मैं ने अपने पिता से पूछा कि मैं देखता हूँ कि आप अन्सार के गिरोह के साथ वह सुलूक करते हैं जो दूसरों के साथ नहीं करते तो उन्होंने भी बेटे से पूछा कि हे मेरे बेटे क्या तुम्हारे दिल में उनकी तरफ़ से कुछ है? उन्होंने कहा कि यह व्यवहार जो मैं अन्सार से करता हूँ तो क्या तुम्हारे दिल में कोई बात है? तो मैंने जवाब दिया नहीं लेकिन मुझे आपके इस मामले से आश्चर्य होता है। हज़रत सअद रज़ि ने जवाब दिया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि मोमिन ही उनको दोस्त रखता है और मुनाफ़िक़ ही उनसे द्वेष रखता है। अत: में इसलिए उनसे सम्बन्ध रखता हूँ।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 456 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान)

जरीर से रिवायत है कि वह एक बार हज़रत उमर के पास से गुज़रे तो हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया मैं ने उन्हें इस हाल में छोड़ा है कि वह अपनी हुकूमत में बावजूद क़ुदरत के सबसे शरीफ़ इन्सान हैं। सख़्ती में सबसे कम हैं। वह तो उन लोगों के लिए मेहरबान माँ जैसे हैं। वह उनके लिए ऐसे जमा करते हैं जैसे चियूंटी जमा करती है। जंग के वक़्त लोगों में से सबसे ज़्यादा बहादुर हैं और क़ुरैश में से लोगों के सबसे ज़्यादा महबूब हैं।

(अलअसाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 64 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,199 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने 55 हिज्री में वफ़ात पाई। देहन्त के समय आपकी उम्र 70 वर्ष से कुछ अधिक थी। कुछ के निकट आपकी उम्र 74 साल थी जबकि कुछ के नज़दीक आपकी उम्र 83 थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 110 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतस्सिहाबा भाग 2 पृष्ठ 610 दारुल जैल बेरूत)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि की वफ़ात के साल के बारे में मतभेद है। विभिन्न रिवायतों में आपकी वफ़ात का साल 51 हिज्री से लेकर 58 हिज्री तक मिलता है लेकिन अधिकतर ने आपकी वफ़ात का साल पचपन हिज्री बयान है।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 456 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने वफ़ात के समय अढ़ाई लाख दिरहम तर्के में छोड़े।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 110 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने अक़ीक़ स्थान पर वफ़ात पाई जो मदीना से सात मील की दूरी पर था या दस मील की दूरी पर था। कुछ कहते हैं कि वहां से लोग आपकी लाश को कंधों पर रखकर मदीना लाए और मस्जिद नब्वी में नमाज़ जनाज़ा अदा की गई। आपका जनाज़ा मरवान बिन हक्म ने पढ़ा जो उस समय मदीना का हुकमरान था। आपकी नमाज़ जनाज़ा में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों ने भी शिरकत फ़रमाई। आपकी तदफ़ीन जन्नतुल बक़ी में हुई।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 456 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 110 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 610 दारुल जेल बेरूत)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि के जनाज़ा के बारे में रिवायत मिलती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि हज़रत अयशा रज़ि से वर्णन करते हैं कि जब हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि का देहान्त हुआ तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों ने यह कहला भेजा कि लोग उनका जनाज़ा लेकर मस्जिद में आएं ताकि वे अर्थात पत्नियां भी उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ें। अत: उन्होंने ऐसा ही किया। जनाज़ा उनके कमरों के सामने रखा गया ताकि वे नमाज़ जनाज़ा पढ़ लें। फिर उन्हें बाबुल जनायज़ से बाहर ले जाया गया जो बैठने की जगहों के पास था। फिर इन अज़वाजे मुतहरात को ये बात पहुंची कि लोगों ने इस बात पर आलोचना की है और कहते हैं कि जनाज़ा मस्जिद में दाख़िल नहीं किए जाते थे। हज़रत आयशा रज़ि को यह बात पहुंची तो उन्होंने कहा कि लोग कितनी जल्दी ऐसी बातों पर आरोप करने लग जाते हैं जिनका उनको ज्ञान नहीं होता। उन्होंने हम पर एतराज़ किया है अर्थात हज़रत आयशा रज़ि ने कहा कि लोगों ने हम पर यह एतराज़ किया है कि जनाज़ा मस्जिद में से गुज़ारा गया हालाँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुहैल बिन बयज़ा की नमाज़ जनाज़ा मस्जिद के अन्दर ही पढ़ी थी। यह मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताबुल जनायज़ बाब अस्सलातो अलल जनाज़ फ़िल्मसाजिद 973)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 109 सअद बिन अबी वक़ास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,1990 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने अपनी बीमारी में वसीयत की कि मेरे लिए कब्र बनाना और मुझ पर ईंटें नसब करना जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए किया गया था। यह भी मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताबुल जनायज़ बाब फिल्लेहद व नसबुल लबन अल्मय्यत 966)

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने मुहाजिरीन मर्दों में से सबसे अन्त में वफ़ात पाई। हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि ने अपने देहान्त के वक़्त एक ऊन का लिबास निकाला और वसीयत की कि मुझे उसका कफ़न पहनाना क्योंकि में इस लिबास को पहन कर जंग बदर में शामिल हुआ था और मैंने उसे उसी समय के लिए अर्थात वफ़ात के वक़्त के लिए सँभाल कर रखा था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 456 सअद बिन मालिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि "सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखते हैं कि

"हज़रत उमर रज़ि के ज़माना में भी जब सहाबा के वज़ीफ़े निर्धारित हुए तो बदरी सहाबियों का वज़ीफ़ा विशेष रूप से विशेष निर्धारित किया गया। ख़ुद बदरी सहाबा रज़ि भी जंग बदर की शिरकत पर विशेष गर्व करते थे। अत: मशहूर मुस्तश्रिक़ विल्यम म्यूर साहिब लिखते हैं। बदरी सहाबी इस्लामी सोसाइटी के उच्च मेम्बर समझे जाते थे। सअद बिन अबी वक़ास रज़ि जब 80 साल की उम्र में फ़ौत

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

होने लगे तो उन्हों ने कहा कि मुझे वह चोग़ा लाकर दो जो मैंने बदर के दिन पहना था और जिसे मैंने आज के दिन के लिए सँभाल कर रखा हुआ है। यह वही सअद रज़ि थे जो बदर के ज़माना में बिल्कुल नौजवान थे और जिन के हाथ पर बाद में ईरान फ़तह हुआ और जो कूफ़ा के बानी और इराक़ के गवर्नर बने परन्तु उनकी नज़र में ये समस्त इज़्ज़तें और गर्व जंग बदर में शिरकत के इज़्ज़त तथा गर्व के मुक़ाबला में बिल्कुल तुच्छ थीं और जंग बदर वाले दिन के लिबास को वह अपने लिए सब लिबासों से बढ़कर लिबास समझते थे और उनकी आख़िरी इच्छा यही थी कि इसी लिबास में लपेट कर उनको क़ब्र में उतारा जाए।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 373)

पहले रिवायत आ चुकी है कि आपने क़सरे सअद बनाया था तो उसके तामीर होने पर किसी के दिल में कोई ख़्याल भी हो, सवाल उठता हो तो यही उस का जवाब है कि उन्होंने आख़िर में एकान्त धारण किया और फिर जिस चीज़ को पसन्द किया वह बदर की जंग में पहना हुआ लिबास था और इससे पहले भी उनकी जो एकान्त की हालत थी वही उनकी विनम्रता और सादगी की दलील है।

हज़रत सअद रज़ि बयान करते हैं कि जब मैं जंग बदर में शामिल हुआ था तो उस समय मेरी सिर्फ एक बेटी थी। अन्य रिवायतों से मालूम होता है कि हज्जतुल विदा के अवसर पर भी आपकी एक ही बेटी थी। फिर उसके बाद अल्लाह तआला ने इतना फ़ज़ल किया कि मेरी औलाद बहुत अधिक हो गई। हज़रत सअद रज़ि ने विभिन्न समयों में नौ शादियां कीं और उनसे अल्लाह तआला ने आपको 34 बच्चों से नवाज़ा जिनमें 17 लड़के और 17 लड़कियां थीं।

(उद्धरित रोशन सितारे भाग 2 पृष्ठ 98-99)

(अलअसाबहा भाग 5 पृष्ठ 219 उम्र बिन सअद बिन अबी विक़ास प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत सअद बिन वक़ास रज़ि का यह वर्णन अब ख़त्म हुआ। इंशा अल्लाह भविष्य में दूसरे सहाबा का वर्णन शुरू होगा।

आज मैं नमाज़ के बाद कुछ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जो जनाज़ा है वह आदरणीय सफ़दर अली गुज्जर साहिब का है जो ज़यााफ़त विभाग मस्जिद फ़ज़ल में रज़ाकार के तौर पर सेवा कर रहे थे। 25 जुलाई को हार्ट-अटैक के कारण उनका देहान्त हुआ। कुछ दिन हस्पताल में दाख़िल रहे। 79 साल उनकी उम्र थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

ख़ुदा के फ़ज़ल से मूसी थे। उन्होंने तीस साल तक ज़यााफ़त विभाग यूके में बतौर सेवक सेवा की तौफ़ीक़ पाई और आख़िर क्षण तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों, काम करने वालों और जमाअत के लोगों की भी बेमिसाल सेवा की तौफ़ीक़ पाते रहे। इसके इलावा मरहूम ने एक लम्बे समय तक अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल और अख़बार अहमदिया की पैकिंग तथा पोस्टिंग में भी सेवाएं कीं। बड़ा लंबा समय उनका असाइलम केस लटका रहा और जब एक लंबे अर्से के बाद असाइलम केस पास हुआ और उनकी फ़ैमिली के यूके आने के सामान हुए तो अल्लाह तआला का बहुत शुक्र अदा किया करते थे और कभी शिकवा नहीं किया कि इतना लम्बा अरसा उनको अकेला रहना पड़ा। मरहूम ख़िलाफ़त के शैदाई थे और हमेशा इसी दर पर फ़िदा रहे बल्कि ऐसे शैदाई थे कि मैं कहूंगा कि ऐसे थे कि वह दूसरों के लिए एक उदाहरण थे। जमाअत के लोग और अपने रहमी रिश्तेदारों से मुहब्बत और इज़्ज़त का सम्बन्ध भी रखने वाले थे। बहुत अधिक दुआ, नमाज़ों के पाबन्द, सेवा करने वाले, हर दिल अज़ीज़ और बहुत दयालु तबीयत के मालिक थे। पंजाबी के शायर भी थे और अपनी अच्छी आवाज़ के कारण से जमाअत के लोगों में बहुत प्रिय थे। मरहूम को जलसा सालाना पर लोगों में नज़्म पढ़ने के कारण से बहुत पसन्द किया जाता था। मरहूम का सम्बन्ध लाहौर की प्रसिद्ध जमात हांडो गुजर से था। मरहूम ने अपने पीछे पत्नी के इलावा चार बेटे और दो बेटियां यादगार छोड़ी हैं।

आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब लिखते हैं कि सफ़दर अली साहिब बहुत सादा मिज़ाज थे। मुख़लिस और निस्सवार्थ सिल्सिला की सेवा करने वाले अनथक ख़ादिम सिल्सिला थे। कहते हैं उनकी तीन ग़ैरमामूली विशेषताएं हैं जिन्होंने मेरे दिल में उनकी मुहब्बत बढ़ाई। पहली यह कि उनमें अल्लाह का शुक्र बहुत था। बावजूद सीमित संसाधनों के बात बात पर अल्लाह तआला की प्रशंसा तथा शुक्र किया करते थे। दूसरा समय के ख़लीफ़ा और ख़िलाफ़त से मुहब्बत दिल में कूट कूट कर भरी हुई थी। कहते हैं मुझे नहीं याद कि कभी संक्षिप्त सी मुलाक़ात भी हुई हो और इस में उन्होंने ख़िलाफ़त से मुहब्बत के सम्बन्ध का इज़हार न किया हो। तीसरा यह कि धर्म की सेवा जो है वह दिल की गहराई तथा मुहब्बत के साथ करते और इस को नेअमत समझते थे

उनकी बेटी तहसीन साहिबा लिखती हैं कि ज़िन्दगी के हर लम्हे में उन्होंने दूसरों को सुख दिया। उनके किसी जानने वाले को या मस्जिद में किसी को भी परेशानी होती थी तो वह घर में हम सबको उस का नाम बता कर दुआ के लिए कहते थे। हर हाल में अल्लाह का शुक्र करते थे। दूसरों से नेकी करके इसका शुक्रिया अदा करते थे कि आपने मुझे नेकी का अवसर दिया। फिर कहती हैं कि वह कहते थे कि तुम दोनों बहनें मुझे इसलिए भी बड़ी प्यारी हो कि नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो बेटियों की इज़्ज़त करेगा उसको जन्नत में मेरा साथ मिलेगा। कहती हैं कि उन्होंने हमें बहुत मुहब्बत के साथ इज़्ज़त तथा सम्मान भी बहुत दिया।

दूसरी बेटी रज़ीया साहिबा हैं। वह कहती हैं कि हमेशा हमारे पिता ख़िलाफ़त की इताअत और मुहब्बत की नसीहत करते थे और ख़ुद भी ख़िलाफ़त से मुहब्बत का बहुत बड़ा नमूना थे। कहती हैं कि जो भी उनकी ताज़ियत के लिए आता है वह यही कहता है कि हमें लगता था कि हमसे अधिक प्यार करते हैं लेकिन वह सबसे ही प्यार करते थे। हमें लगता था कि वह मस्जिद में क़रीब क़रीब के लोगों से ही सम्बन्ध निभाते हैं लेकिन हर कोई यह कह रहा था कि वह हमारे ख़ानदान का हिस्सा थे। दूर दूर के लोगों के भी काम करते थे और उनसे सम्बन्ध निभाने वाले थे। ये उनकी बेलौस मुहब्बत और सेवा के कारण से है जो लोगों ने उनके साथ इस तरह इज़हार किया है। मुझे भी बहुत से पत्र उनके बारे में लोगों ने लिखे हैं और हर ख़त से यही लगता है कि उनका हर एक से व्यक्तिगत सम्बन्ध, प्यार और इख़लास का सम्बन्ध था। कम ही लोग ऐसे होते हैं जो इस तरह हर वर्ग में प्रिय हों और इसी तरह उनकी हर मज्लिस में हर लिखने वाले ने यही लिखा है कि उनकी बातों का केन्द्र बिन्दु ख़िलाफ़त और इससे सम्बन्ध होता था। अल्लाह तआला उनको अपने प्यारों के क़दमों में जगह दे। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों और दुआओं का वारिस बनाए। उनकी पत्नी साहिबा को सेहत दे। धैर्य और शान्ति प्रदान फ़रमाए। उनकी पत्नी भी लंबे समय से बीमार हैं। उनकी भी उन्होंने बड़े इख़लास, प्यार और मुहब्बत से बहुत सेवा की है और अपने समस्त कामों और फ़र्ज़ों के साथ सेवा की है। सोवा तो लंगर ख़ाने में दारुल ज़ियाफ़त में भी करते थे और एक वक़्फ़े ज़िन्दगी से बढ़कर सेवा की उनमें भावना थी और साथ साथ उन्होंने अपने घरेलू फ़र्ज़ भी निभाए और इसी तरह भाषा न आने के बावजूद अंग्रेज़ पड़ोसियों की भी सेवा किया करते थे। उनसे भी सम्बन्ध रखा और उन्होंने भी उनकी बहुत प्रशंसा की हैं। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचे फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीया इफ़्फ़त नसीर साहिबा का है जो आदरणीय प्रोफ़ैसर नसीर अहमद ख़ान साहिब की पत्नी थीं। 3 मई को 97 साल की उम्र में दिल की हरकत बन्द हो जाने की कारण से वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनकी शादी 1951 ई को मरहूम प्रोफ़ैसर डाक्टर नसीर अहमद ख़ान साहिब से हुई थी। बच्चों में, पीछे रहने वालों में उनकी एक बेटी आयशा नसीर साहिबा हैं जो डाक्टर इनायतुल्लाह मंगला साहिब अमरीका की पत्नी हैं। बेटों में ज़हीर अहमद ख़ान हैं और डाक्टर मुनीर अहमद ख़ान हैं और उनके ये दोनों बेटे ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम में ब्याहे गए हैं। उनके एक पोते बशीर अहमद ख़ान वाक़िफ़ ज़िन्दगी हैं और इस वक़्त बड़े अहसन रंग में एम टी ए में ट्रांसमिशन में सेवाएं कर रहे हैं। यहां पढ़ाई की उच्च शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद अपने आपको

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

वक़्फ़ के लिए पेश किया। अल्लाह तआला उनको भी उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

उनके बेटे लिखते हैं कि जब हम छोटे थे तो माता के साथ ही सोते थे और हमारी अक्सर रात को आँख खुलती थी तो तहज्जुद की नमाज़ में रो-रो कर दुआ कर रही होती थीं। यही बात उनकी बेटी ने भी लिखी है। क़ुरआन क़रीम की बाक़ायदा तिलावत करती थीं और हम बच्चों पर भी अनिवार्य था कि सुबह तिलावत करके स्कूल जाएं। उसके बिना इजाज़त नहीं। शुरू में, साठ की दहाई में यह लाहौर में भी रही हैं। वहां जनरल सैक्रेटरी लजना के तौर पर मॉडल टाउन में सेवाएं करती रहीं। 28 साल तक सदर लजना दारुन्नसर ग़र्बी की सेवा की और इस वक़्त वसायल भी थोड़े होते थे और फैले हुए मुहल्ले थे, सवारियां नहीं थीं। पैदल ही दूर दूर के इलाक़ों में, दारुन्नसर का जो मुहल्ला था दरिया तक फैला हुआ था वहां तक ख़ुद जाया करती थीं। फिर जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने जमाअत के लोगों को यह तहरीक फ़रमाई कि अपने समस्त ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों और कमज़ोर अहमदियों को पत्र लिखे जाएं तो इस में उन्होंने भी अपने रिश्तेदारों को बहुत ख़ुतूत लिखे।

किसी न किसी बहाने ग़रीब प्रियों और मुहल्ला वालों की मदद करती रहतीं और खासतौर पर रमज़ान के दिनों में ज़रूर उन्हें कुछ न कुछ पका कर भेजती रहतीं। हमेशा यह कोशिश होती थी कि लोगों को आपस में जोड़ें और झगड़े से बचाएं। उनकी बेटी आयशा साहिबा लिखती हैं कि एक वाक़िफ़ ज़िन्दगी के साथ बहुत ही अच्छे आचरण के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी और हमारी शिक्षा तथा तर्बीयत को अपना पहला फ़र्ज़ समझती थीं और उसके साथ दुआएं भी बहुत करती थीं। अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद और नस्लों को भी उनकी नेक इच्छाओं को पूरा करने वाला और दुआओं का वारिस बनाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय अब्दुर्रहीम साक़ी साहिब का है जो जनरल सैक्रेटरी ऑफ़िस यूके के काम करने वाले थे। 31 मार्च को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

अल्लाह के फ़ज़्ल से मूसी थे। 31 दिसम्बर 1934 ई को गांव रायपुर रियासत नाभा हिन्दुस्तान में पैदा हुए थे। उनके पिता का नाम रहमत अली था। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके मरहूम पिता के ताया जान चौधरी करीम बख़श साहिब नम्बरदार जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे उनके माध्यम से आई थी। अब्दुर्रहीम साक़ी साहिब मरहूम के पिता की ख़ालेरी और ताया ज़ाद बहन रहीमन बी-बी साहिबा सहाबिया पत्नी मौलवी क़ुदरतुल्लाह साहिब सनौरी रिश्ता में आपकी फूफी भी लगती थीं। साक़ी साहिब मरहूम को 1958 ई से लेकर 1968 ई तक दस साल बतौर सैक्रेटरी माल और क़ाइद मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तख़्त हज़ारा सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। पार्टीशन के बाद यह तख़्त हज़ारा आकर आबाद हो गए थे। इस के बाद 1968 ई में जमाअत अहमदिया तख़्त हज़ारा के अमीर निर्धारित किए गए और जुलाई 1974 ई तक बतौर अमीर जमाअत सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। 13 जुलाई 1974 ई को तख़्त हज़ारा के ग़ैर अहमदी शर पसंद समूह ने इर्द-गिर्द के इलाक़ों में से गुंडों और अहमदियत के दुश्मनों के बहुत बड़े मुसल्लह जत्था को जमा करके अहमदियों के ख़िलाफ़ फ़साद पैदा करने का सिल्सिला शुरू कर दिया। मस्जिद के एक हिस्से को आग लगा कर इस पर क़ब्ज़ा कर लिया। मेहमान ख़ाने को मुकम्मल तौर पर जला दिया। साक़ी साहिब की किरयाना की दुकान थी उसको लूट कर आग लगा दी। इसी तरह आपकी एक दूसरी कपड़े की दुकान थी इस पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। घरों को आग के हवाले कर दिया और यह भी अन्दर ही थे और धूएं की कारण से बेहोश हो गए। बेहोशी की हालत में शर पसन्द उनको उठा के मस्जिद में ले गए और लाऊड स्पीकर से ऐलान कर दिया कि मैंने इस्लाम क़बूल कर लिया है और तौबा कर ली है ताकि दूसरे अहमदी भी जमाअत से अलग हो जाएं। बहरहाल जब उन्हें होश आया तो उन्होंने देखा कि बर्छियों और नेज़ों के घेरे में यह बैठे हैं और इसका उनके ज़हन पर बड़ा असर हुआ। फिर वहां से उनको बच्चों ने ही इस कारण से लाहौर उनके किसी अज़ीज़ के पास भिजवा दिया। वहां उनका ईलाज हुआ और यह वहां रहे। फिर लाहौर में ही एक जमाअत में सैटल (settle)हुए थे, जा कर दोबारा आबाद हुए। उन्होंने कारोबार शुरू किया और अपने अज़ीज़ के साथ जुड़े मकान के जुड़े हिस्सा में नमाज़ का सैंटर बनाया। बाजमाअत नमाज़ों के क़ियाम की तरफ़ लोगों को ध्यान दिलाया। सैंकड़ों बच्चों को और लोगों को क़ुरआन करीम पढ़ाया।

फिर नवम्बर 2000 ई में यह हिजरत करके लंदन आ गए। यहां उसके बाद 2020 ई तक नैशनल जनरल सैक्रेटरी ऑफ़िस यूके में रज़ाकाराना तौर पर बाक़ायदगी के साथ सेवा करते रहे और वाक़फ़ीन ज़िन्दगी से बढ़कर समय के पाबंद थे। पहले दफ़्तर पहुंचते थे ताकि किसी को इंतज़ार न करना पड़े बल्कि कई बार दफ़्तर आने से पहले अगर कभी नाश्ता में देर हो गई तो नाश्ता किए बिना आ जाया करते थे और फिर उनकी यह ख़ूबी थी कि उनके बच्चों ने लिखा है कि रोज़ाना क़ुरआन करीम के तीन सिपारे तिलावत किया करते थे। ख़िलाफ़त के साथ बड़ी अक़ीदत और मुहब्बत रखते थे। बच्चों और बड़ों को हमेशा ख़िलाफ़त के साथ जुड़ा रहने और समय के ख़लीफ़ा का अदब और पूर्ण वफ़ा के साथ आज्ञापालन करने की तरफ़ बड़े दर्द के साथ नसीहत किया करते थे। वाकफ़ीन और खासतौर पर मुरब्बियों का दिल से सम्मान और उनके साथ मुहब्बत करने वाले वजूद थे। लगभग साठ साल से अधिक समय तक स्वेच्छा से ख़िदमत करने की उनको तौफ़ीक़ मिली। उनके बेटे ख़ालिद महमूद साहिब को लीवर्ज़ वुड (Colliers Wood) के सदर जमाअत भी हैं। मरहूम ने पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटे और पाँच बेटियां यादगार छोड़ी हैं। अल्लाह तआला मरहूम का स्तर बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद और उनकी नस्ल को भी उनकी नेक इच्छाओं को पूरा करने वाला बनाए।

अगला जनाज़ा जो पढ़ाऊंगा वो सईद अहमद सहगल साहिब का है। यह हमारे पी ऐस दफ़्तर में डिसपैच (dispatch) विभाग में रज़ाकार थे। उनकी 12 अप्रैल को 90 साल की उम्र में वफ़ात हुई है। दो बेटे और दो बेटियां पीछे छोड़ी हैं। मरहूम का बचपन कादियान में गुज़रा। आरम्भिक शिक्षा भी वहीं हासिल की। लम्बा समय यहां प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर के डिसपेच सैक्शन में बतौर रज़ाकार सेवा की तौफ़ीक़ पाई। बड़े पढ़े लिखे व्यक्ति थे। दुनियावी इल्म के साथ-साथ क़ुरआन करीम और जमाअत के मस्लों का भी ख़ूब इल्म रखते थे। नमाज़ों के पाबन्द और ख़िलाफ़त के शैदाई थे। बहुत विनम्र और शराफ़त का एक नमूना थे। अपने हलक़े में बहुत प्रिय थे। मैंने देखा है जब भी मिले तो इंतिहाई विनम्रता से और उनको बड़ा दर्द होता था कि उनकी औलाद भी इसी तरह जमाअत से सम्बन्ध रखने वाली हो। असलम ख़ालिद साहिब लिखते हैं कि आप ख़ास इल्मी मिज़ाज रखते थे। अक्सर दोपहर के खाने पर विभिन्न विषयों पर बात करते और खासतौर पर ईसाइयत और यहूदियत पर गहरा इल्म था। हमारे दफ़्तर के काम करने वाले बशीर साहिब लिखते हैं कि आख़िरी उम्र में भी कोशिश रही कि जमाअत की सेवा करें। एक बार बताया कि किसी काम के उद्देश्य से मस्जिद आ रहे थे कि चक्कर आ गया और नीचे गिर गए और चोट भी लगी लेकिन उसके बावजूद दफ़्तर ज़रूर आते थे हालाँकि काफ़ी दूर से पैदल आना पड़ता था ताकि सेवा का अवसर हाथ से न जाए। अपना बड़ा मकान बेच कर मस्जिद के क़रीब फ़्लैट ले लिया था ताकि आने जाने में आसनी रहे।

अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद के हक़ में भी उनकी दुआएं स्वीकार फ़रमाए।

(अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल 4 सितम्बर 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

आदरणीय इलयास अहमद साहिब (माइनज़, जर्मनी) के साथ तय पाया।

*प्रिया हसबाना सलीम तूर (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय सलीम अहमद तूर साहिब (नूर दर शटड, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद राहील हफ़ीज़ पुत्र आदरणीय मुहम्मद हफ़ीज़ साहिब(रोएडस हाइम, जर्मनी)के साथ तय पाया।

*प्रिया दुर्रे मकनून अन्जुम (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय उल्फ़त हुसैन अन्जुम साहिब (मरहूम, हैविगलज़ हाइम,) जर्मनी का निकाह प्रिय हारून अहमद मुबारक पुत्र आदरणीय महमूद मुबारक साहिब (हैविगलज़ हाइम, जर्मनी के साथ तय पाया। लड़की के वली उसके भाई बिलाल अहमद साहिब हैं।

*प्रिया मुनज़्ज़ह भट्टी (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय फ़हीम अहमद भट्टी साहिब (ऐडनग्न जर्मनी)का निकाह प्रिय कलीम अहमद पुत्र आदरणीय नईम अहमद साहिब (हायलबरोन, जर्मनी)के साथ तय पाया।

*प्रिया ज़ारा अहमद पुत्री आदरणीय आमिर हुमायूँ अहमद साहिब (कैनेडा)का निकाह प्रिय मुहसिन अमजद (वक्फे नौ) पुत्र आदरणीय तारिक़ अमजद साहिब (अमरीका)के साथ तय पाया।

*प्रिया सदफ़ इक़बाल सलीम पुत्री आदरणीय नसीम इक़बाल साहिब (हेमबर्ग, जर्मनी)का निकाह प्रिय मिर्ज़ा तलहा सलीम (वक्फे नौ) पुत्र आदरणीय मिर्ज़ा नईम अहमद साहिब (हेमबर्ग, जर्मनी) के साथ तय पाया।

*प्रिया मेहरा नजीब पुत्री आदरणीय नजीब अहमद मलिक साहिब (रावन हाइम, जर्मनी)का निकाह प्रिय उसमान ताहिर हनीफ़ (वक्फे नौ) पुत्र आदरणीय मुहम्मद हनीफ़ साहिब (श्टोटन , जर्मनी)के साथ तय पाया।

*प्रिया मनाहल बट पुत्री आदरणीय वसीम अहमद बट साहिब (वलडगर्ब, जर्मनी) का निकाह प्रिय अक़ील बाबर पुत्र आदरणीय बाबर जलाल साहिब (मर फ़ील्डन वॉल्ड वर्फ,) जर्मनी के साथ तय पाया।

*प्रिया काशिफ़ा अज़ीज़ पुत्री आदरणीय अज़ीज़ुल्लाह साहिब (करूनबर्ग, जर्मनी)का निकाह प्रिय ताबिश अहमद पुत्र आदरणीय इर्फ़ान अहमद साहिब (दराए आईश, जर्मनी) के साथ तय पाया।

*प्रिया हादिया अहमद पुत्री आदरणीय महमूद अहमद साहिब (मेटमन, जर्मनी) का निकाह प्रिय सय्यद शहज़ाद अहमद पुत्र आदरणीय सय्यद हामिद मक़बूल साहिब (नवीस, जर्मनी)के साथ तय पाया।

*प्रिया फ़ामेह अहमद पुत्री आदरणीय क़दीर अहमद साहिब (बर्लिन, जर्मनी)का निकाह प्रिय फ़िरासत अहमद वड़ैच पुत्र आदरणीय बशारत अहमद वड़ैच साहिब (हो हिन् शटाइन,) जर्मनी के साथ तय पाया।

*प्रिया मुबशरा भट्टी पुत्री आदरणीय मुहम्मद अली भट्टी साहिब (रैड शटड, जर्मनी) का निकाह प्रिय महरान मन्सूर पुत्र आदरणीय मन्सूर अहमद भली साहिब (लाहौर, पाकिस्तान हाल जर्मनी के साथ तय पाया।

*प्रिया ग़ज़ाला इरशाद पुत्री आदरणीय इरशाद अहमद ख़ान साहिब (मुरब्बी सिल्सिला पाकिस्तान) का निकाह प्रिय वलीद अहमद ख़ान पुत्र आदरणीय नईम अहमद साहिब (फ्रैंकफ़र्ट, जर्मनी) के साथ तय पाया। लड़की के वली पाकिस्तान में हैं और उनकी तरफ़ से लड़की के भाई आदरणीय मुहम्मद अम्मार अहमद ख़ान साहिब आफ़ जर्मनी लड़की के वकील हैं।

*प्रिया किरन जनजूआ पुत्री आदरणीय मुहम्मद अनीस जनजूआ साहिब (फ़रीद रिश् डोरफ़ जर्मनी) का निकाह प्रिय ग़ज़नफ़र अली पुत्र आदरणीय नज़ीर अहमद साहिब (मरहूम बाद होम बुर्ग, जर्मनी) के साथ तय पाया।

निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दुआ कर लें। अल्लाह तआला इन समस्त रिश्तों को प्रत्येक दृष्टि से बरकतों वाला फ़रमाए।

दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

20 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े 11 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 39 फ़ैमिलीज़ के 146 लोग और 13 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 29 जमाअतों से आई थीं। कई फ़ैमिलीज़ और लोग बड़े लंबे सफ़र तय करके पहुंचे थे।

Dusseldorf से आने वाले 250 किलोमीटर,Calw से आने वाले 285 किलोमीटर और म्यूनख़ से आने वाली फ़ैमिलीज़ 405 किलोमीटर की दूरी तय करके अपने आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ातों का प्रोग्राम दोपहर 2 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैयतुल हमीद का उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसार फ्रैंकफ़र्ट से 115 किलोमीटर के दूरी पर स्थित Fulda शहर में मस्जिद बैयतुल हमीद के उद्घाटन का आयोजन था। 3 बजकर 45 पर हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और Fulda शहर के लिए रवानगी हुई। लगभग एक घंटा 15 मिनट के सफ़र के बाद 5 बजे हुज़ूर अनवर की फ़लडा मस्जिद बैयतुल हमीद तशरीफ़ आवरी हुई। स्थानीय जमाअत के लोग मर्द औरतें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आने के मुंतज़िर थे जैसे ही हुज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो लोगों ने बड़ा जोश भरे स्वागत किया और बच्चों और बच्चियों ने स्वागत न्ज़में और दुआइया नज़्में प्रस्तुत कीं। औरतों ने अपने हाथ ऊंचे करते हुए दर्शन का सौभाग्य पाया। आज का दिन जमाअत Fulda के लिए भी ख़ुशियों और बरकतों का दिन था। हुज़ूर अनवर के मुबारक क़दम उनके निवास में दूसरी बार पड़े थे और फिर आज उनकी मस्जिद का उद्घाटन हो रहा था। प्रत्येक ख़ुश था और अहलन व सहलन व मर्हबा की सदाएँ हर तरफ़ से आ रही थीं। सदर जमाअत फ़लडा आदरणीय नजमुस्सक़िद साहिब और मुबल्लिग़ सिल्सिला फ़लडा एजाज़ अहमद जनजूआ साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई। इस अवसर पर निम्नलिखित मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। प्रान्त ह्यसन् के रेडीयो HR का प्रतिनिधि, अख़बार Osthessen News का प्रतिनिधि, अख़बार Fulda Zeitung का प्रतिनिधि।

पर्दा उठाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए और मस्जिद का निरीक्षण फ़रमाते हुए उसके नक़्शा के हवाले से पूछा और फ़रमाया नक़्शा में थोड़ी सी तबदीली के द्वारा मस्जिद के पिछले हिस्सा में एक पूर्ण सफ़ बन सकती थी।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई जिसके साथ मस्जिद का उद्घाटन हुआ। फिर हुज़ूर अनवर लजना हाल में तशरीफ़ ले गए जहां बच्चियों के ग्रुपस ने विभिन्न तराने और दुआइया नज़्में प्रस्तुत कीं। औरतों ने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए इन सब बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के बाहरी सेहन में तशरीफ़ ले आए और हुज़ूर अनवर ने एक पौधा लगाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद का बाहरी सेहन और इस में पहले से बनी हुई इमारत देखी और कुछ देर के लिए यहां के मुबल्लिग़ सिल्सिला एजाज़ अहमद जनजूआ साहिब के घर तशरीफ़ ले गए महोदय का घर पहले से बनाई गई इमारत के एक हिस्सा में है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के साहन के साथ ही फ़लडा जमाअत के एक मैंबर आदरणीय मिर्ज़ा मसऊद अहमद साहिब के नए बनाए जाने वाले घर की बुनियाद रखा और इसी सेहन में स्नेह करते हुए एक पौधा भी लगाया। इस दौरान बच्चे एक क़तार में खड़े हो चुके थे हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए बच्चों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। इसके बाद मज्लिस आमला जमाअत फ़लडा और मस्जिद बनाने वाले विभाग और काम करने वालों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

समय के ख़लीफ़ा अय्यदहुल्लाह तआला की बैअत

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम का जन्म दिनांक 14 शवाल1250 हिज्री तदनुसार 13 फरवरी 1835 ई को हुआ और आपकी 24 रबी उल-अव्वल 1326 हिजरी तदनुसार 26 मई 1908 ई को वफात हुई। चांद के कैलण्डर के अनुसार आपकी उम्र लगभग 76 साल थी जिस तरह सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम शुरू हुआ और हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्हो ख़ुलफ़ाए राशिदीन थे इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे प्रादुर्भाव के मज़हर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद चौदहवीं सदी हिज्री के 26 वीं साल दिनांक 25 रबी उल-अव्वल 1326 अनुसार 27 मई 1908 ई को एक बार फिर अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़ते राशिदा की स्थापना फ़रमाई।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की सूरत नूर आयत नम्बर 56 में फ़रमाया है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उन से अल्लाह ने दृढ़ वादा किया उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि हज़रत इमाम महदी जो कि उम्मती नबी होंगे उनके बाद नबुव्वत की प्रणाली के अनुसार ख़िलाफ़त की प्रणाली जारी होगी। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार जिन सम्मान्नीय खलीफाओं को मस्नद ख़िलाफ़त पर आसीन फ़रमाया उनके नाम तथा ख़िलाफ़त का ज़माना नीचे दर्ज किया जाता है।

(1)हज़रत हाजी हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो दिनांक 27 मई1908 ई से 13 मार्च 1914 ई (देहान्त)

(2)हज़रत हाजी मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो दिनांक 14 मार्च 1914 ई से 8 नवम्बर 1965 ई (देहान्त)

(3) हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहेमहुल्लाह दिनांक 8 नवम्बर 1965 ई से 8 जून 1982 ई (देहान्त)

(4)हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहेमहुल्लाह तआला 10 जून 1982 से 19 अप्रैल 2003 ई (देहान्त)

(5)हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब नसरहुल्लाह नस्रन अज़ीज़ा 22 अप्रैल 2003 ई। दुआ है अल्लाह तआला आपको सेहत सलामती वाली लम्बी उमर प्रदान फ़रमाए । आमीन

बैअत फार्म सिलसिला अहमदिया

प्रिय पाठको अब जो भी बैअत करके अहमदिया मुस्लिम जमाअत में शामिल होना चाहता है उसे मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस की सेवा में निम्नलिखित बैअत फ़ार्म मुकम्मल करके भिजवाना होता है।

बैअत फ़ार्म सिल्सिला आलिया अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस की सेवा में

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो

मैंने बैअत की शर्तें जमाअत अहमदिया के आस्थाएं ज़रूरी हिदायतें और फ़राइज़ पढ़ कर स्वीकार किए और मैं हुज़ूर की सेवा में बैअत का निम्नलिखित फ़ार्म भर करके निवेदन करता हूँ /करती हूँ कि मेरी बैअत स्वीकार फ़रमाई जाए।

أشهد أن لا إله الا الله وحده لا شريك له و أشهد أن محمدا عبده ورسوله

أشهد أن لا إله الا الله وحده لا شريك له و أشهد أن محمدا عبده ورسوله

आज मैं हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के हाथ पर बैअत करके अहमदिया मुस्लिम जमाअत में दाख़िल होता हूं/होती हूँ मेरा दृढ़ और सम्पूर्ण ईमान है कि हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं। मैं हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को वही इमाम महदी और मसीह मौऊद स्वीकार करता हूँ करती हूँ। जिसकी ख़ुशख़बरी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रदान फ़रमाई थी मैं वादा करता हूँ / करती हूँ कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निर्धारित की गई दस बैअत की शर्तों का पाबन्द रहने की कोशिश करूँगा /करूँगी धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दूंगा /दूंगी। ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ हमेशा वफ़ा का सम्बन्ध रखूंगा /रखूंगी और ख़लीफ़ा की हैसियत से आपकी समस्त मारूफ़ हिदायतों पर अनुकरण करने की कोशिश करूँगा /करूँगी।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّ أَتُوْبُ إِلَیْهِ اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّ أَتُوْبُ إِلَیْهِ اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّ أَتُوْبُ إِلَیْهِ رَبِّ إِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ فَإِنَّهُ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا اَنْتَ

हे मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं अपने गुनाहों को स्वीकार करता हूँ /करती हूँ तू मेरे गुनाह क्षमा कर कि तेरे सिवा कोई क्षमा करने वाला नहीं। आमीन।

मुसलमानों के 73 फ़िरक़े

याद रहे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को सचेत करते हुए फ़रमाया था कि

وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ لَتَفْتَرِقَنَّ أُمَّتِیْ عَلٰی ثَلَاثٍ وَسَبْعِیْنَ فِرْقَةً وَاحِدَةٌ فِی الْجَنَّةِ وَثِنْتَانِ وَسَبْعُوْنَ فِی النَّارِ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللهِ مَنْ هُمْ قَالَ الْجَمَاعَةُ

"ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़ा में मुहम्मद की जान है ,मेरी उम्मत 73(तहत्तर) फ़िर्क़ों में बिखर जाएगी। इन में से एक जन्नत में होगा । और 72 आग में होंगे। पूछा गया हे अल्लाह के रसूल वह कौन होंगे। قَالَ الْجَمَاعَةُ वह एक जमाअत होगी।'

सम्मान्नीय पाठको! 73 फ़िर्क़ों में बटे हुए मुसलमानों में से हर फ़िर्क़ा कहता है कि हमारा फ़िर्क़ा जन्नती है? इस सवाल के जवाब के लिए हमें नमाज़ बाजमाअत पर ग़ौर करना चाहिए। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नती फ़िरक़े के बारे में फ़रमाया था कि वह "जमाअत" होगी। उदाहरण के तौर पर अगर किसी मस्जिद में एक सौ नमाज़ी जमा हो जाएं और उन में से 95 सफ़ों में खड़े हो कर ज़ुहर की नमाज़ अदा करें मगर उनका कोई इमाम न हो जो नमाज़ में इन की इमामत करवाए तो इन 95 की नमाज़ बाजमाअत नहीं होगी। परन्तु उन में से पाँच नमाज़ी जो मस्जिद के किसी दूसरे बरामदे में एक को इमाम बनाकर चार उस की इमामत में नमाज़ अदा कर लें, तो उन पाँच की नमाज़ नमाज़ बाजमाअत कहलाएगी

बिल्कुल यही हाल अहमदिया मुस्लिम जमाअत और बाक़ी फ़िर्क़ों का है। इन में से किसी फ़िर्क़े की इमामत और क़ियादत ऐसा इमाम या ख़लीफ़ा नहीं कर रहे जिसे अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा बनाया हो। सिर्फ अहमदिया मुस्लिम जमाअत ऐसी जमाअत है जिनके ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा बनाया है और सारी दुनिया के अहमदी आपकी इमामत तथा क़ियादत में इस्लामी तालीमात के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारते और दिन रात इस्लाम की सेवा में ज़िम्मेदारी अदा कर रहे हैं। अत: सिर्फ़ जमाअत अहमदिया ही वह अकेली जमाअत है जो "जमाअत" कहलाने की हक़दार है?

अहमदिया मुस्लिम जमाअत को काफ़िर क्यों क़रार दिया गया

एक और सवाल जो ग़ैर अज़ जमाअत पूछा करते हैं कि कई हुकूमतों की पार्ली-मैंट या मक्का के राबता आलमे इस्लामी में शामिल 72 फ़िर्क़ों के मुसलमान लीडरों ने जमाअत अहमदिया को ग़ैर मुस्लिम और काफ़िर क़रार दिया है? ऐसा क्यों है

प्रिय पाठको ! याद रखें कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों के 72 फ़िर्क़ोंके बारे में फ़रमाया था " فی النار वे दोज़ख़ी हैं।

एक फ़िर्क़े के बारे में फ़रमाया "فی الجنة" वह जन्नती है

कि इस दृष्टि से 72 का हक़ पर होने का दावा ही ग़लत और बे-बुनियाद है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान के ख़िलाफ़ है।

हर मुसलमान जानता है कि मुसलमान 72 फ़िर्क़ों में बटे हुए हैं। शीया, सुन्नी, देवबन्दी, बरेलवी, वहाबी,तब्लीग़ी,मुक़ल्लिद, ग़ैर मुक़ल्लिद, इत्यादि मुसलमानों के फ़िर्क़े हैं और उन्होंने एक दूसरे के ख़िलाफ़ कुफ़र के फ़तवे दिए हुए हैं। फिर उन को अहमदिया मुस्लिम जमाअत के ख़िलाफ़ फ़तवा देते हुए अपने फ़िर्क़े पर लगे कुफ्र के फ़तवा पर भी ग़ौर कर लेना चाहिए।

इस्लामी भाइयो! ग़ौर फ़रमाएं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से निकला हुआ एक एक शब्द पूरा हो गया। 72 फिर्कों ने एक तरफ़ हो कर 73 वें फ़िर्क़े को अलग कर दिया। और साबित कर दिया कि ये वे 72 हैं जिनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने(दोज़ख़ी होने

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 17 September 2020 Issue No.38

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

की)चेतावनी वाली भविष्यवाणी फ़रमाई थी।

सवाल करने वाले मुसलमान भाईयों की सेवा में बड़ी विनम्रता से निवेदन है कि ऐसे फ़िर्क़ों के मुसलमानों जैसे नामों और शक्लों पर न जाएं बल्कि उन के इस्लाम के विरुद्ध और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के ख़िलाफ़ स्पष्ट फतवों और फ़ैसलों को देखें जो उन के इस्लाम और मुसलमान होने को ही शंकित बना देते हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था: अगर कोई मुसलमान को काफ़िर कहता है बावजूद इसके कि वह मुसलमान है तो "اِلَّا كَانَ هُوَ الْكَافِرُ" वह ख़ुद ही काफ़िर हो जाता है।

(सुन अबी दाऊद अल बाब अला ज़्यादुल ईमान)

इन 72 फ़िर्क़ों में बटे मुसलमानों ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत को काफ़िर क़रार देकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस के अनुसार अपने आपको ही काफ़िर क़रार दे दिया है।

हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हो ,हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्हो ,हज़रत हसन तथा हज़रत हुसैन रिज़वानुल्लाह अलैहिम को शहीद करने वाले भी ख़ुद को मुस्लिम उल्मा तथा फ़ुक़्हा कहते थे।

अब ज़रा तारीख़ इस्लाम के पन्ने देख लीजिए तो आपको यह नसीहत प्राप्त करने वाली हक़ीक़त भी दिखाई देगी कि अपने आपको मुसलमान कहलाने वाले उल्मा और लीडरों ने अल्लाह के नेक बंदों के ख़िलाफ़ कैसे कैसे मकरूह आरोप और फ़तवा जारी किए और फिर उन्हें बेदर्दी से मौत के घाट उतार दिया।

हज़रत उसमान रज़ि हज़रत अली रज़ि पर इल्ज़ाम और फ़तवा लगाने वाले भी अपने आप को मुसलमान कहते थे।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि पर इल्ज़ाम लगाने वाले और उन के ख़िलाफ़ फ़तवा जारी करने वाले और फिर इंतिहाई ज़ालिमाना तरीक़े पर शहीद करने वाले भी अपने आपको मुसलमान कहते थे।

इन्हीं मुसलमान कहलाने वालों इसी तरह अपने आपको बड़े आलिम और फ़िक़ही समझने वालों ने ही चारों इमामों को भी तकलीफें पहुंचाईं। हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफा रहमहुल्लाह को जाहिल,बिद्दती,ज़िन्दीक़ काफ़िर तक का लक़ब दिया। आख़िर क़ैदख़ाना में ज़हर देकर मार दिया। हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई को उज़्र मिन इब्लीस (अर्थात शैतान से अधिक ख़तरनाक)कहा। हज़रत इमाम मालिक को 25 साल तक जुमा तथा जमाअत से रोकने वाले अपने ज़माने के मौलवी और दीनी राहनुमा थे। और हज़रत इमाम हंबल को 28 माह क़ैद में रखकर भारी ज़ंजीरें पैरों में डालने वाले भी मुसलमान थे। हज़रत इमाम बुख़ारी वतन से निकाले गए। हज़रत क़ुतुबुल अकताब बायज़ीद बुस्तानी 7 बार शहर बिस्ताम से निकाले गए। हज़रत ग़ौसे आज़म को फ़ुक़्हा ने काफ़िर कहा। हज़रत शैख़ मुहयुद्दीन इब्ने अरबी को जो शेख़ अकबर कहलाते हैं न सिर्फ़ काफ़िर बल्कि अक्फ़र (सब से बड़ा काफिर) कहने वाले भी मुसलमान थे। उस ज़माना के उल्मा ने कहा कि उनका कुफ़्र यहूद तथा ईसाई के कुफ़्र से बढ़ कर है।

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

दुनिया में भेजा है जो लोग मेरा विरोध करते हैं वे मेरा नहीं ख़ुदा तआला का विरोध करते हैं क्योंकि जब तक मैं ने दावा न किया था बहुत से उन में से मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते थे और अपने हाथ से लौटा ले कर वुज़ू कराने को सवाब और गर्व जानते थे और बहुत से ऐसे भी थे जो मेरी बैअत में आने के लिए ज़ोर देते थे, लेकिन जब ख़ुदा तआला के नाम और निशानों से यह सिल्सिला शुरू हुआ , तो वही विरोध के लिए उठे। इस से साफ़ पाया जाता है कि इनकी व्यक्तिगत शत्रुता मेरे साथ न थी बल्कि शत्रुता उनको ख़ुदा तआला से ही थी। अगर ख़ुदा तआला के साथ उनको सच्चा सम्बन्ध था तो उन की नेकी और तक़्वा और ख़ुदा तआला से भय की मांग यह होनी चाहिए थी कि सबसे पहले वे मेरे इस ऐलान पर लब्बैक कहते और शुक्र के सिज्दे करते हुए मेरे साथ हाथ मिलाते, परन्तु नहीं। वे अपने हथियारों को लेकर निकल खड़े हुए और उन्होंने विरोध को यहां तक पहुंचाया कि मुझे काफ़िर कहा और बेदीन कहा। दज्जाल कहा। अफ़सोस ! उन मर्ख़ों को यह ज्ञात न हुआ कि जो आदमी ख़ुदा से कि قُلْ اِنِّيْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ और اَنْتَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ تَوْحِيْدِيْ وَتَفْرِيْدِيْ की आवाज़ें सुनता है वह उनके बुरा कहने और गालियों की क्या पर्वा कर सकता है। अफ़सोस तो यह है कि इन अज्ञानियों को यह भी मालूम नहीं हुआ कि कुफ़्र और ईमान का सम्बन्ध दुनिया से नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के साथ है। और ख़ुदा तआला मेरे मोमिन और मामूर होने का सत्यापन करता है। फिर इन गंदी बातों की मुझे क्या पर्वा हो सकती है? अत: इन बातों से साफ़ पाया जाता है कि यह लोग मेरे विरोधी न थे बल्कि ख़ुदा तआला की बातों का उन्होंने विरोध किया और यही कारण है जिससे अल्लाह की तरफ से भेजे गए मामूर के विरोधियों का ईमान नष्ट हो जाता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 167 से 170 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

काम किया जाएगा तो इस को बुरा समझा जाएगा और अगर अच्छा काम किया जाएगा तो उसको अच्छा समझा जाएगा बल्कि और मस्जिदें तो अलग रहीं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हरमे काबा के बारे में भी फ़रमाया है कि वह किसी मुजरिम या क़ानून के ख़िलाफ़ करने वाले को पनाह नहीं देता और न क़तल करके भागने वाले को बचा सकता है। बल्कि ऐसे लोग पकड़े जाऐंगे और उन्हें क़ानूनी गिरफ़त में लाया जाएगा। अत: फ़तह मक्का के अवसर पर जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना पहुंची कि इब्न अख़तल जिसके क़त्ल का आपने आदेश दिया था काबा के पर्दों को पकड़ कर खड़ा है तो आप ने फ़रमाया उसे वहीं क़त्ल कर दो। अत: उसे क़त्ल कर दिया (सीरत हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 93) अत: अगर कुछ मुजरिमों को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ाना काबा में भी क़त्ल कर देने का हुक्म दिया था तो दूसरी मस्जिदों की ख़ाना काबा के मुक़ाबला में क्या हैसियत है कि इन में क़ानून के विरुद्ध काम करने वाले लोगों को क़ानून से उच्च समझा जाए। अत: मस्जिदें तक़्वा के क़ियाम के लिए क़ायम की गई हैं न कि क़ानून तोड़ने के लिए। अगर मस्जिद में भी क़ानून तोड़ने के अड्डे बन जाएं तो फिर शैतान के लिए तो कोई घर भी बन्द नहीं रहता जिन घरों को ख़ुदा तआला ने अमन के लिए दिल की शान्ति के लिए रूहानियत के लिए, तक़्वा की स्थापना के लिए, सहयोग और आपसी एकता के लिए बनाया है इन घरों को मुसलमानों में फ़ित्ना डलवाने का माध्यम बनाना या उन घरों को हुकूमत से बग़ावत करने का माध्यम बनाना या उन घरों को फ़ित्ना तथा फ़साद की बुनियाद रखने की जगह बनाना एक ख़तरनाक ज़ुल्म है जिसकी इस्लाम किसी अवस्था में भी आज्ञा नहीं देता।

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ133 से 134 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad